CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2014 with Solution PDF-Set 2/1/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 6, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

अचल खड़े रहते जो ऊँचा शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।
आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरुणाई,
नए जन्म की श्वास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई।
आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना,
नवयुग के पृष्ठों पर तुमको है नूतन इतिहास लिखाना।
उठो राष्ट्र के नवयौवन तुम दिशा-दिशा का सुन आमंत्रण,
जगो, देश के प्राण जगा दो नए प्रात का नया जागरण।
आज विश्व को यह दिखला दो हममें भी जागी तरुणाई,
नई किरण की नई चेतना में हमने भी ली अँगड़ाई।।

(क) मार्ग की रुकावटों को कौन तोड़ता है और कैसे? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में दृढ़ और सहनशील नवयुवकों को राष्ट्र की आशा बताया गया है।
- निर्झर का प्रवाह बाधाओं के बीच भी निरंतर आगे बढ़ने का प्रतीक है।

चरण 1: कर्ता पहचानें आरंभिक पंक्तियों में उन युवकों का वर्णन है जो तूफानों में भी सिर उठाए अचल खड़े रहते हैं। उनके भीतर सहनशीलता और दृढ़ता है। अगली पंक्ति का 'वही' इन्हीं साहसी नवयुवकों की ओर संकेत करता है।

चरण 2: तरीका स्पष्ट करें 'बहते हैं जैसे हों निर्झर' से पता चलता है कि ये युवक झरने की तरह अविराम आगे बढ़ते हैं। वे कठिनाइयों से घबराकर रुकते नहीं, बल्कि धैर्य और दृढ़ संकल्प से उनका सामना करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सहनशील और दृढ़ नवयुवक निर्झर की तरह निरंतर आगे बढ़ते हुए साहस तथा संकल्प से मार्ग की रुकावटों को तोड़ते हैं।

त्वरित सुझाव: 'कौन' के उत्तर में नवयुवकों की पहचान और 'कैसे' के उत्तर में निर्झर जैसी निरंतर गति अवश्य लिखें।

1(ख). नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

अचल खड़े रहते जो ऊँचा शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।
आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरुणाई,
नए जन्म की श्वास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई।
आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना,
नवयुग के पृष्ठों पर तुमको है नूतन इतिहास लिखाना।
उठो राष्ट्र के नवयौवन तुम दिशा-दिशा का सुन आमंत्रण,
जगो, देश के प्राण जगा दो नए प्रात का नया जागरण।
आज विश्व को यह दिखला दो हममें भी जागी तरुणाई,
नई किरण की नई चेतना में हमने भी ली अँगड़ाई।।

(ख) नवयुवक प्रगति के नाम को कैसे सार्थक करते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रगति का अर्थ कठिनाइयों को पार करते हुए आगे बढ़ना है।
- काव्यांश में यौवन की सार्थकता उसके संघर्षशील और कर्मशील होने में है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पहचानें कवि कहता है, 'प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।' यहाँ दुर्गमता का अर्थ कठिन और बाधाओं से भरा मार्ग है। इसलिए उत्तर का आधार युवकों का कठिनाइयों का सामना करना है।

चरण 2: भाव समझाएँ नवयुवक सहनशीलता और दृढ़ता के बल पर रुकावटें पार करते हैं। निर्झर की तरह आगे बढ़ने का चित्र उनकी निरंतर सक्रियता बताता है। केवल प्रगति की इच्छा करने के बजाय उनका संघर्ष उसे वास्तविक रूप देता है।

चरण 3: निष्कर्ष नवयुवक कठिनाइयों से भरे मार्ग पर दृढ़ता और साहस से चलते हुए बाधाओं को पार करते हैं; इस प्रकार वे प्रगति के नाम को सार्थक करते हैं।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर में 'दुर्गमता पर चलकर' का भाव खोलें: कठिनाइयों का सामना करना और लगातार आगे बढ़ना।

1(ग). नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

अचल खड़े रहते जो ऊँचा शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।
आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरुणाई,
नए जन्म की श्वास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई।
आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना,
नवयुग के पृष्ठों पर तुमको है नूतन इतिहास लिखाना।
उठो राष्ट्र के नवयौवन तुम दिशा-दिशा का सुन आमंत्रण,
जगो, देश के प्राण जगा दो नए प्रात का नया जागरण।
आज विश्व को यह दिखला दो हममें भी जागी तरुणाई,
नई किरण की नई चेतना में हमने भी ली अँगड़ाई।।

(ग) 'विगत युग के पतझर' से क्या आशय है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में प्राकृतिक ऋतुएँ मानवीय और सामाजिक स्थितियों की प्रतीक बन सकती हैं।
- 'पतझर' का आशय उसके सामने रखे गए 'नव मधुमास' के विरोध से स्पष्ट होता है।

चरण 1: शाब्दिक संकेत समझें पतझर में पत्ते झड़ते हैं और प्रकृति की हरियाली घटती है। इस कारण वह कविता में उजाड़पन, क्षीणता और निराशा का संकेत देता है। 'विगत युग' इसे बीते हुए समय की स्थिति से जोड़ता है।

चरण 2: संदर्भगत अर्थ बताएँ कवि युवकों से उस पतझर पर नया मधुमास खिलाने को कहता है। मधुमास नवीन जीवन, आशा और उल्लास का प्रतीक है। इस विरोध से स्पष्ट है कि बीते युग की निष्क्रियता और निराशा को नई चेतना में बदलना अपेक्षित है।

चरण 3: निष्कर्ष 'विगत युग के पतझर' से आशय बीते समय की जड़ता, निराशा और अवनति की स्थिति से है, जिसे युवकों को आशा और नवजीवन में बदलना है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ निकालते समय उसी पंक्ति में आए विरोधी प्रतीक 'नव मधुमास' से तुलना करें।

1(घ). नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

अचल खड़े रहते जो ऊँचा शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।
आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरुणाई,
नए जन्म की श्वास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई।
आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना,
नवयुग के पृष्ठों पर तुमको है नूतन इतिहास लिखाना।
उठो राष्ट्र के नवयौवन तुम दिशा-दिशा का सुन आमंत्रण,
जगो, देश के प्राण जगा दो नए प्रात का नया जागरण।
आज विश्व को यह दिखला दो हममें भी जागी तरुणाई,
नई किरण की नई चेतना में हमने भी ली अँगड़ाई।।

(घ) कवि देश के नवयुवकों का आह्वान क्यों कर रहा है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आह्वान का उद्देश्य जानने के लिए कवि द्वारा बताए गए कार्यों पर ध्यान देना चाहिए।
- काव्यांश में तरुणाई को देश के भविष्य की आशा और जागरण की शक्ति माना गया है।

चरण 1: संबोधन का कारण खोजें कवि कहता है कि देश की भावी आशा युवकों की तरुणाई बनी है। उनमें नए जीवन की शक्ति जाग रही है। इसलिए वह नवयुवकों को राष्ट्र के परिवर्तन का उत्तरदायित्व सौंपते हुए पुकारता है।

चरण 2: अपेक्षित कार्य स्पष्ट करें 'देश के प्राण जगा दो' और 'नूतन इतिहास लिखाना' जैसे कथन बताते हैं कि कवि देश में नई चेतना चाहता है। युवक बीते युग की निराशा दूर करें और अपनी जागरूकता तथा कर्मशीलता विश्व के सामने प्रकट करें।

चरण 3: निष्कर्ष कवि नवयुवकों का आह्वान इसलिए करता है कि वे देश में नई चेतना जगाएँ, निराशा दूर करें और राष्ट्र की प्रगति का नया इतिहास रचें।

त्वरित सुझाव: 'क्यों' का उत्तर देते समय कवि की पुकार दोहराने के बजाय उसका लक्ष्य, अर्थात राष्ट्र का जागरण, लिखें।

1(ङ). नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

अचल खड़े रहते जो ऊँचा शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।
आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरुणाई,
नए जन्म की श्वास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई।
आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना,
नवयुग के पृष्ठों पर तुमको है नूतन इतिहास लिखाना।
उठो राष्ट्र के नवयौवन तुम दिशा-दिशा का सुन आमंत्रण,
जगो, देश के प्राण जगा दो नए प्रात का नया जागरण।
आज विश्व को यह दिखला दो हममें भी जागी तरुणाई,
नई किरण की नई चेतना में हमने भी ली अँगड़ाई।।

(ङ) कविता का मूल संदेश अपने शब्दों में लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मूल संदेश पूरी कविता की केंद्रीय प्रेरणा को अपने शब्दों में व्यक्त करता है।
- काव्यांश में युवा शक्ति, कठिनाइयों से संघर्ष और राष्ट्रीय जागरण पर बल है।

चरण 1: प्रमुख भावों को जोड़ें आरंभ में सहनशीलता और दृढ़ता से बाधाएँ पार करने की बात है। आगे तरुणाई को देश की भावी आशा बताया गया है। दोनों भाव मिलकर युवकों के साहस को राष्ट्र की उन्नति से जोड़ते हैं।

चरण 2: केंद्रीय प्रेरणा समझें कवि पुराने पतझर पर नया मधुमास खिलाने और नूतन इतिहास लिखने को कहता है। उसका आग्रह है कि युवक अपनी ऊर्जा को जागरूक कर्म में लगाएँ, निराशा दूर करें और देश में नई चेतना का संचार करें।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का संदेश है कि युवा साहस, सहनशीलता और दृढ़ संकल्प के साथ कठिनाइयों को पार करें तथा देश में नई चेतना जगाकर उसके उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करें।

त्वरित सुझाव: मूल संदेश में कविता की सभी पंक्तियाँ न दोहराएँ; युवा शक्ति, संघर्ष और राष्ट्रनिर्माण को एक सूत्र में रखें।

2(क). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं। ज़िन्दगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है। ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह हैं कि बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

(क) गद्यांश में अकबर का उदाहरण क्यों दिया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में किसी उदाहरण का प्रयोजन उससे पहले व्यक्त मुख्य विचार के समर्थन से स्पष्ट होता है।
- यहाँ मुख्य विचार है कि बड़े व्यक्तित्व संकट और मुसीबतों में विकसित होते हैं।

चरण 1: उदाहरण का प्रसंग बताएँ गद्यांश के आरंभ में बड़ी हस्तियों के बड़ी मुसीबतों में पलने की बात कही गई है। इसके बाद अकबर का उदाहरण आता है। पाठ के अनुसार उसका जन्म रेगिस्तान में अत्यंत अभाव की दशा में हुआ था; उसके पिता के पास एक कस्तूरी के अतिरिक्त कोई दौलत नहीं थी। यह विवरण उसके जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियाँ सामने रखता है।

चरण 2: मुख्य विचार से संबंध जोड़ें गद्यांश बताता है कि अकबर ने तेरह वर्ष की आयु में अपने पिता के दुश्मन को परास्त किया। लेखक इस उपलब्धि को संकटों में हुए उसके विकास से जोड़ता है। उदाहरण का उद्देश्य यह दिखाना है कि कठिन परिस्थितियाँ मनुष्य को साहसी, संघर्षशील और समर्थ बनाती हैं; उसी शक्ति से वह बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अकबर का उदाहरण यह सिद्ध करने के लिए दिया गया है कि संकट और अभाव महान व्यक्तित्वों का निर्माण करते हैं। कठिन परिस्थितियों में पले अकबर की कम उम्र की विजय इसी साहस और सामर्थ्य का प्रमाण बताई गई है।

त्वरित सुझाव: उदाहरण का प्रयोजन पूछे जाने पर घटना के साथ वह मुख्य विचार भी लिखें जिसे घटना सिद्ध करती है।

2(ख). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं। ज़िन्दगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है। ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह हैं कि बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

(ख) पांडवों की विजय का क्या कारण था? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रश्न में विजय का कारण गद्यांश में दिए गए अनुभवों से बताना है।
- लेखक कठिनाइयों को साहस और संघर्ष की क्षमता विकसित करने वाला मानता है।

चरण 1: स्पष्ट कारण पहचानें गद्यांश कहता है कि अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में होने पर भी पांडव जीते। इसके तुरंत बाद दो कारण दिए गए हैं: उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी और वनवास के जोखिम को पार किया था।

चरण 2: अनुभव और परिणाम जोड़ें इन संकटों का सामना करने से पांडव कठिन परिस्थितियों में टिके रहने और संघर्ष करने में समर्थ बने। लेखक उनकी विजय को इसी संकटजनित साहस से जोड़ता है। उत्तर में गद्यांश के इन कारणों को ही आधार बनाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पांडवों की विजय का कारण लाक्षागृह की मुसीबत और वनवास के जोखिमों का सामना करने से विकसित उनका साहस तथा संघर्ष की क्षमता थी।

त्वरित सुझाव: 'क्योंकि' से शुरू होने वाले दोनों अंश खोजें; लाक्षागृह और वनवास, दोनों अनुभव उत्तर में रखें।

2(ग). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं। ज़िन्दगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है। ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह हैं कि बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए – "जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी कथन का आशय उसके पहले और बाद के प्रसंग से स्पष्ट किया जाता है।
- यहाँ जीत और हार बड़े उद्देश्य के लिए जोखिम उठाने से जुड़े सुख तथा दुख के प्रतीक हैं।

चरण 1: कथन का संदर्भ पहचानें यह कथन उन लोगों के बारे में है जो जीवन में कोई बड़ा लक्ष्य लेकर संघर्ष नहीं करते। गद्यांश उन्हें ऐसी आत्माएँ कहता है जिन्हें न बहुत अधिक सुख मिलता है, न बहुत अधिक दुख। वे सुरक्षित और बँधे हुए जीवन के अभ्यस्त हैं तथा असफलता की आशंका से कोई बड़ा जोखिम नहीं उठाते।

चरण 2: लाक्षणिक अर्थ खोलें 'जीत हँसती है' से बड़ी सफलता का उत्साह और 'हार के रोने' से असफलता का गहरा दुख समझना चाहिए। जो लोग बड़े उद्देश्य के लिए प्रयास ही नहीं करते, वे इन दोनों तीव्र अनुभूतियों से वंचित रहते हैं। उनकी स्थिति गोधूलि जैसी बीच की, उत्साहहीन स्थिति है; लेखक उसे साहसपूर्ण जीवन के विपरीत रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि जोखिम और संघर्ष से बचने वाले लोगों का जीवन साधारण तथा उत्साहहीन रह जाता है। वे न बड़ी सफलता का आनंद अनुभव करते हैं, न बड़े प्रयास की विफलता का दुख, क्योंकि वे जीवन को दाँव पर लगाकर आगे बढ़ते ही नहीं।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय जीत के आनंद और हार के दुख, दोनों का अर्थ खोलकर उन्हें जोखिम न लेने की प्रवृत्ति से जोड़ें।

2(घ). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं। ज़िन्दगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है। ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह हैं कि बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

(घ) साहस की ज़िंदगी को सबसे बड़ी जिंदगी क्यों कहा गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में साहस को मनुष्य के अन्य गुणों और बड़ी उपलब्धियों का आधार बताया गया है।
- साहसी जीवन का मूल्य निर्भयता, उद्देश्यनिष्ठा और मानवता को प्रेरणा देने में है।

चरण 1: व्यक्तिगत विशेषताएँ स्पष्ट करें साहस का जीवन निर्भय होता है। साहसी मनुष्य इस चिंता में नहीं रुकता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे। वह बड़े लक्ष्य के लिए प्रयत्न करता है और असफलताओं के बीच भी पीछे नहीं हटता। इसलिए उसका जीवन केवल सुरक्षित दिनचर्या तक सीमित नहीं रहता, बल्कि निरंतर आगे बढ़ने का आनंद देता है।

चरण 2: व्यापक महत्त्व बताएँ गद्यांश के अनुसार जनमत की चिंता छोड़कर उद्देश्य की ओर बढ़ने वाला व्यक्ति दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश देता है। क्रांति करने वाले लोग पड़ोसियों से तुलना करके अपनी चाल धीमी नहीं करते। इस तरह साहस व्यक्ति की क्षमता को विकसित करने के साथ दूसरों को भी नई दिशा और प्रेरणा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष साहस की जिंदगी सबसे बड़ी कही गई है क्योंकि वह निर्भय होकर बड़े उद्देश्यों के लिए संघर्ष करना सिखाती है। ऐसा व्यक्ति असफलता और लोकमत से विचलित हुए बिना आगे बढ़ता है तथा मानवता को शक्ति, प्रकाश और प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो आधार रखें: साहसी व्यक्ति का निर्भय संघर्ष और उसके जीवन से समाज को मिलने वाली प्रेरणा।

2(ङ). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं। ज़िन्दगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है। ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह हैं कि बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

(ङ) दुनिया की असली ताकत किसे कहा गया है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग के अनुसार किसी विशेषण का आशय समझने के लिए उसके पहले और बाद के वाक्यों को जोड़कर पढ़ना चाहिए।
- व्यक्ति की वास्तविक शक्ति यहाँ साहस, स्वतंत्र उद्देश्य और मनुष्यता को दिशा देने की क्षमता में निहित है।

चरण 1: कथन का आधार पहचानिए गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है। इससे आशय उस निडर मनुष्य से है जो तमाशा देखने वालों की राय से भयभीत होकर अपना उद्देश्य नहीं छोड़ता। वह अड़ोस-पड़ोस को देखकर अपनी दिशा तय नहीं करता।

चरण 2: उसकी शक्ति का कारण समझिए ऐसा मनुष्य अपने बड़े उद्देश्य की ओर निर्भय होकर बढ़ता है और दूसरों की चाल देखकर अपनी चाल धीमी नहीं करता। उसका स्वतंत्र और साहसी आचरण मनुष्यता को प्रकाश देता है। इसलिए उसकी शक्ति केवल निजी सफलता तक सीमित नहीं रहती, वह दूसरों के लिए भी प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष जनमत की चिंता किए बिना अपने उद्देश्य के लिए साहसपूर्वक जीने वाला व्यक्ति दुनिया की असली ताकत है, क्योंकि वही मनुष्यता को प्रकाश और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले व्यक्ति की पहचान लिखें, फिर गद्यांश के मनुष्यता को प्रकाश देने वाले कथन से उसका कारण जोड़ें।

2(च). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं। ज़िन्दगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है। ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह हैं कि बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

(च) क्रांतिकारियों के क्या लक्षण हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्ति के लक्षण उसके उद्देश्य तथा व्यवहार से पहचाने जाते हैं।
- गद्यांश में क्रांतिकारियों की विशेषता स्वतंत्र लक्ष्य और निर्भय गति है।

चरण 1: लक्ष्य की स्वतंत्रता समझिए क्रांतिकारी अपने उद्देश्य की तुलना पड़ोसी के उद्देश्य से नहीं करते। वे अपना लक्ष्य दूसरों की पसंद या जनमत के दबाव में निर्धारित नहीं करते।

चरण 2: कार्य करने की गति पहचानिए वे अपनी चाल पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम नहीं बनाते। अर्थात् दूसरों की धीमी प्रगति से प्रभावित होकर अपना प्रयास कम नहीं करते, बल्कि साहसपूर्वक लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष क्रांतिकारी स्वतंत्र उद्देश्य रखते हैं और दूसरों की चाल देखकर अपने प्रयासों की गति धीमी नहीं करते। वे निडर होकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं।

त्वरित सुझाव: क्रांतिकारियों के लक्षण पूछे जाने पर गद्यांश की अंतिम पंक्ति से उद्देश्य और चाल, दोनों संकेत लें।

2(छ). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं। ज़िन्दगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है। ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह हैं कि बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

(छ) ज़िंदगी की कौन सी सूरत आपको अच्छी लगती है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिगत पसंद के प्रश्न में अपना स्पष्ट मत बताकर उसका आधार गद्यांश के विचारों से देना चाहिए।
- गद्यांश साहसपूर्ण प्रयत्न और जोखिम से बचकर सीमित जीवन बिताने की दो सूरतों का अंतर बताता है।

चरण 1: पसंद की सूरत चुनिए मुझे ज़िंदगी की पहली सूरत अच्छी लगती है, जिसमें मनुष्य बड़े उद्देश्य के लिए कोशिश करता है और सफलता पाने के लिए आगे बढ़ता है। वह कदम-कदम पर असफलता मिलने पर भी पीछे नहीं हटता। इस जीवन में कठिनाइयों से जूझने की तैयारी और आगे बढ़ने का उत्साह होता है।

चरण 2: चुनाव के कारण स्पष्ट कीजिए गद्यांश के अनुसार साहस से मनुष्य के अन्य गुण भी विकसित होते हैं। संघर्षपूर्ण जीवन में अपनी क्षमताओं को निखारने तथा बड़ी उपलब्धि पाने की संभावना रहती है। इसके विपरीत, बँधे हुए घाट का पानी पीने वाला जीवन जोखिम से तो बचता है, पर उसमें बड़ी जीत का उल्लास भी नहीं होता। इसलिए निरंतर आगे बढ़ने का आनंद और उद्देश्यपूर्ण प्रयास मुझे अधिक आकर्षित करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष मुझे साहसपूर्वक बड़े लक्ष्य के लिए संघर्ष करने वाली ज़िंदगी अच्छी लगती है, क्योंकि वह असफलता में भी धैर्य बनाए रखना, अपनी शक्ति विकसित करना और आगे बढ़ने का आनंद पाना सिखाती है।

त्वरित सुझाव: अपनी पसंद बताते समय केवल पहली सूरत न लिखें; उसका स्वरूप और गद्यांश पर आधारित दो कारण भी स्पष्ट करें।

2(ज). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं। ज़िन्दगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है। ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह हैं कि बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

(ज) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपयुक्त शीर्षक संक्षिप्त होता है और पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को समेटता है।
- अकबर, पांडव तथा क्रांतिकारियों के उदाहरण यहाँ साहसपूर्ण जीवन का महत्त्व स्थापित करते हैं।

चरण 1: मुख्य विचार पहचानिए गद्यांश में कठिनाइयों से व्यक्तित्व के विकास, हिम्मत से मिलने वाली सफलता और निडर होकर उद्देश्य की ओर बढ़ने की चर्चा है। सभी प्रसंग साहस के महत्त्व से जुड़े हैं।

चरण 2: शीर्षक का विस्तार जाँचिए केवल अकबर या पांडवों पर आधारित शीर्षक एक उदाहरण तक सीमित हो जाएगा। साहसपूर्ण जीवन पर केंद्रित शीर्षक आरंभ के उदाहरणों और अंत के संदेश, दोनों को समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है : साहस की ज़िंदगी।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय किसी एक ऐतिहासिक उदाहरण के बजाय सभी अनुच्छेदों को जोड़ने वाले साहस के भाव को आधार बनाएँ।

2(झ). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं। ज़िन्दगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है। ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह हैं कि बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

(झ) निडर और बेखौफ़ में प्रयुक्त उपसर्ग लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग वह शब्दांश है जो मूल शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन करता है।
- उपसर्ग पहचानते समय उससे अलग होने वाले मूल शब्द तथा पूरे शब्द का अर्थ देखना चाहिए।

चरण 1: निडर का विभाजन कीजिए निडर में नि उपसर्ग और डर मूल शब्द है। नि जुड़ने से डर का अभाव व्यक्त होता है; निडर का अर्थ है जिसे डर न हो। इसलिए यहाँ उपसर्ग नि है।

चरण 2: बेखौफ़ का विभाजन कीजिए बेखौफ़ में बे उपसर्ग तथा खौफ़ मूल शब्द है। खौफ़ का अर्थ भय है और बे उसके अभाव को बताता है। इसलिए बेखौफ़ का अर्थ भय से रहित है तथा उसका उपसर्ग बे है।

चरण 3: निष्कर्ष निडर में प्रयुक्त उपसर्ग नि है और बेखौफ़ में प्रयुक्त उपसर्ग बे है।

त्वरित सुझाव: दोनों शब्दों में पहले डर और खौफ़ को अलग करें; उनसे पहले बचने वाले नि तथा बे ही उपसर्ग हैं।

2(ञ). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं। ज़िन्दगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई देती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनन्द नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है। ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह हैं कि बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

(ञ) मिश्र वाक्य में बदलिए – साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और कम-से-कम एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- वाक्य-रूपांतरण में संरचना बदलती है, लेकिन मूल कथन का अर्थ सुरक्षित रहना चाहिए।

चरण 1: विशेषण पदबंध को उपवाक्य बनाइए मूल वाक्य में साहस की पदबंध ज़िंदगी की विशेषता बताता है। इसे जो साहस से भरी होती है उपवाक्य में बदलने पर वही विशेषता स्पष्ट क्रिया के साथ व्यक्त होती है।

चरण 2: प्रधान और आश्रित अंश जोड़िए जो ज़िंदगी साहस से भरी होती है आश्रित विशेषण उपवाक्य है। वह सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है प्रधान उपवाक्य है। जो और वह का संबंध दोनों को जोड़ता है तथा मूल वाक्य का आशय बनाए रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष मिश्र वाक्य : जो ज़िंदगी साहस से भरी होती है, वह सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है।

त्वरित सुझाव: रूपांतरण के बाद जो वाला आश्रित उपवाक्य और वह वाला प्रधान उपवाक्य पहचानें तथा मूल अर्थ की समानता जाँचें।

3(क). नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए — विषय (क): शिक्षा में खेलों का महत्त्व [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय की भूमिका, क्रमबद्ध विवेचन और सारपूर्ण उपसंहार होना चाहिए।
- शिक्षा का उद्देश्य बौद्धिक विकास के साथ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक गुणों का विकास भी है।

चरण 1: निबंध का स्वरूप तय कीजिए शीर्षक के बाद भूमिका में शिक्षा का व्यापक अर्थ स्पष्ट करें। मुख्य भाग में खेलों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक लाभ समझाएँ। अंत में विद्यालयों में खेलों के नियमित अवसर और पढ़ाई के साथ संतुलन की आवश्यकता बताकर निबंध समाप्त करें।

चरण 2: विषय की रूपरेखा बनाइए विचारों का क्रम रखें : स्वस्थ शरीर, तनाव में कमी, एकाग्रता, सहयोग, अनुशासन, नेतृत्व और हार-जीत का संतुलित स्वीकार। प्रत्येक गुण को खेल के किसी व्यवहार से जोड़ें। जैसे नियम पालन से अनुशासन और सामूहिक खेल से सहयोग की भावना विकसित होती है। केवल लाभ गिनाने के स्थान पर शिक्षा से उनका संबंध स्पष्ट करें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध लिखिए **शिक्षा में खेलों का महत्त्व**

शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान देना या परीक्षा में अच्छे अंक दिलाना नहीं है। वह मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक क्षमताओं का विकास करती है। इस व्यापक उद्देश्य की पूर्ति में खेलों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए खेलों को विद्यालयी जीवन का आवश्यक अंग मानना चाहिए।

नियमित खेलकूद से शरीर सक्रिय और स्वस्थ रहता है। दौड़ने, कूदने तथा विभिन्न खेलों में भाग लेने से शरीर में स्फूर्ति आती है। लंबे समय तक पढ़ाई करने से उत्पन्न थकान और मानसिक तनाव भी कम होता है। प्रसन्न और सक्रिय विद्यार्थी पढ़ाई में अधिक उत्साह से भाग ले सकता है। खेल के दौरान तुरंत निर्णय लेने तथा स्थिति के अनुसार रणनीति बदलने का अभ्यास उसकी एकाग्रता और सूझबूझ को भी बढ़ाता है।

खेल का मैदान अनेक जीवन-मूल्य सिखाता है। नियमों का पालन करने से अनुशासन और समय पर अभ्यास करने से नियमितता आती है। सामूहिक खेलों में खिलाड़ी व्यक्तिगत प्रदर्शन के साथ पूरे दल की सफलता का ध्यान रखते हैं। इससे सहयोग, नेतृत्व और परस्पर विश्वास विकसित होते हैं। अलग-अलग पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के साथ खेलने से मित्रता तथा समानता की भावना भी बढ़ती है।

हार और जीत खेल के स्वाभाविक परिणाम हैं। जीत मिलने पर विनम्र रहना तथा हार मिलने पर अपनी कमियों को पहचानकर फिर प्रयास करना खेल भावना की पहचान है। यह अभ्यास विद्यार्थी को जीवन की कठिनाइयों का धैर्यपूर्वक सामना करने में सहायता देता है। विद्यालय को सुरक्षित मैदान, आवश्यक साधन और उचित मार्गदर्शन उपलब्ध कराना चाहिए, ताकि हर विद्यार्थी को अपनी रुचि के अनुसार खेलने का अवसर मिल सके।

पढ़ाई और खेल एक-दूसरे के पूरक हैं। संतुलित समय-सारणी में दोनों को स्थान देकर शिक्षा अधिक उपयोगी और आनंददायक बन सकती है। खेलों से मिलने वाला स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और सहयोग का संस्कार विद्यार्थी को सक्षम तथा जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहायता करता है।

चरण 4: निष्कर्ष खेल शिक्षा को सर्वांगीण बनाते हैं; इसलिए नियमित खेलकूद, उचित मार्गदर्शन और पढ़ाई के संतुलित समन्वय को विद्यालयी व्यवस्था में स्थान मिलना चाहिए।

त्वरित सुझाव: निबंध में प्रत्येक लाभ के साथ उसका शैक्षिक संबंध बताएँ; सहयोग के लिए दल और अनुशासन के लिए खेल के नियम का उदाहरण उपयोगी है।

3(ख). नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए — विषय (ख): परहित सरिस धर्म नहिं भाई [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक निबंध में विषय का अर्थ स्पष्ट करके उदाहरणों और तर्कों द्वारा उसके महत्त्व का विवेचन किया जाता है।
- परहित का अर्थ दूसरों के कल्याण के लिए निःस्वार्थ कार्य करना है। यह केवल धन देने तक सीमित नहीं, बल्कि समय, श्रम, ज्ञान और संवेदना का योगदान भी है।

चरण 1: निबंध का स्वरूप और रूपरेखा निर्धारित करें पहले विषय को शीर्षक बनाकर उसका आशय स्पष्ट करें। इसके बाद प्रकृति में परोपकार, समाज में उसकी आवश्यकता, दैनिक जीवन के उदाहरण और सेवा की सच्ची भावना पर क्रमबद्ध अनुच्छेद लिखें। अंत में परहित को जीवन में अपनाने का संदेश दें। निबंध में पत्र जैसी संबोधन या हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं है।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध लिखें **परहित सरिस धर्म नहिं भाई**

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसके सुख-दुःख और उन्नति का संबंध अन्य लोगों से भी जुड़ा होता है। इसलिए केवल अपने हित की चिंता करना जीवन का पूर्ण उद्देश्य नहीं हो सकता। तुलसीदास की उक्ति 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' का आशय है कि दूसरों की भलाई के

समान कोई धर्म नहीं है। यहाँ धर्म का सार करुणा, सेवा और मानवीय कर्तव्य में निहित है।

प्रकृति हमें निरंतर परोपकार की शिक्षा देती है। वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते, नदियाँ अपना जल सबको देती हैं और सूर्य बिना भेदभाव के प्रकाश फैलाता है। मनुष्य भी अपनी योग्यताओं और संसाधनों का उपयोग दूसरों के कल्याण के लिए करके जीवन को सार्थक बना सकता है।

परहित के लिए धनी होना आवश्यक नहीं है। कोई विद्यार्थी अपने कमजोर साथी को पढ़ा सकता है, कोई व्यक्ति वृद्ध को सड़क पार करा सकता है और कोई जरूरतमंद तक भोजन पहुँचा सकता है। बीमार की सेवा करना, संकटग्रस्त पड़ोसी की सहायता करना तथा सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखना भी परहित के रूप हैं। छोटा-सा सहयोग किसी दूसरे के लिए बड़ा सहारा बन सकता है।

आज स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा के बीच परोपकार का महत्त्व और बढ़ गया है। जब समाज के सक्षम लोग वंचितों की सहायता करते हैं, तब आपसी विश्वास और सहयोग की भावना मजबूत होती है। शिक्षा और अवसरों से वंचित व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनने में सहायता देना स्थायी कल्याण का मार्ग है।

सच्ची सेवा दिखावे, लाभ या प्रशंसा की इच्छा से मुक्त होती है। सहायता करते समय सामने वाले का सम्मान बनाए रखना चाहिए। उसकी आवश्यकता समझे बिना सहायता थोपना भी उचित नहीं है। परहित का अर्थ अपने कर्तव्यों की उपेक्षा करना नहीं, बल्कि अपनी सामर्थ्य के अनुसार दूसरों के प्रति जिम्मेदार बनना है।

यदि हम प्रतिदिन किसी के लिए एक उपयोगी कार्य करने का संकल्प लें, तो समाज अधिक संवेदनशील बन सकता है। परहित मानवता का व्यावहारिक रूप है। दूसरों के जीवन में आशा जगाकर हम अपने जीवन को भी अर्थ और संतोष देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इस निबंध का केंद्रीय विचार है कि नि:स्वार्थ सेवा, सहयोग और दूसरों के सम्मान की रक्षा ही परहित का सच्चा रूप है। इसे दैनिक आचरण में अपनाने से व्यक्ति और समाज दोनों का कल्याण होता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में उक्ति का अर्थ बताकर धन के अलावा समय, ज्ञान और श्रम से की जाने वाली सेवा के उदाहरण दें; इससे निबंध व्यावहारिक और प्रभावी बनेगा।

3(ग). नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए — विषय (ग): विज्ञापन और हम [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक विषय के निबंध में विषय का परिचय, उसके लाभ और हानियों का संतुलित विश्लेषण तथा व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किए जाते हैं।
- विज्ञापन वस्तुओं, सेवाओं या संदेशों को लोगों तक पहुँचाने का माध्यम है। उपभोक्ता को विज्ञापन की आकर्षक प्रस्तुति और उत्पाद की वास्तविक उपयोगिता में अंतर समझना चाहिए।

चरण 1: स्वरूप और विषय-योजना तैयार करें शीर्षक के बाद दैनिक जीवन में विज्ञापनों की उपस्थिति से भूमिका आरंभ करें। अगले अनुच्छेदों में सूचना और जनजागरण में उनकी भूमिका, भ्रामक दावों और अनावश्यक उपभोग की समस्या तथा जागरूक उपभोक्ता के कर्तव्य लिखें। अंत में जिम्मेदार विज्ञापन और विवेकपूर्ण खरीदारी का संदेश दें। विचारों का क्रम ऐसा रखें कि लाभों और सीमाओं, दोनों का उचित विवेचन हो।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध प्रस्तुत करें **विज्ञापन और हम**

समाचारपत्र खोलते ही, टेलीविजन चलाते ही अथवा बाजार की सड़क पर निकलते ही हमें अनेक विज्ञापन दिखाई देते हैं। कोई नया उत्पाद परिचित कराता है, कोई छूट का वादा करता है और कोई बेहतर जीवन का सपना दिखाता है। विज्ञापन आधुनिक जीवन का ऐसा हिस्सा बन गए हैं जो हमारी पसंद, आवश्यकताओं और खरीदारी के निर्णयों को प्रभावित करता है।

विज्ञापन का प्रमुख उद्देश्य किसी वस्तु या सेवा की जानकारी देना और लोगों को उसकी ओर आकर्षित करना है। इसके माध्यम से ग्राहक उपलब्ध विकल्पों, कीमतों तथा सुविधाओं के बारे में जान सकते हैं। उत्पादक अपने सामान को व्यापक बाजार तक पहुँचा सकते हैं। जनहित के विज्ञापन स्वच्छता, शिक्षा, जल-संरक्षण और सामाजिक समानता जैसे विषयों पर जागरूकता भी फैलाते हैं। इस प्रकार विज्ञापन केवल व्यापार का साधन नहीं है।

समस्या तब होती है जब आकर्षक प्रस्तुति तथ्य पर भारी पड़ जाती है। कभी किसी वस्तु को सफलता या प्रतिष्ठा की अनिवार्य शर्त की तरह दिखाया जाता है। कभी प्रसिद्ध व्यक्तियों के प्रभाव और मनमोहक दृश्यों से खरीदार को लुभाया जाता है। ऐसी प्रस्तुति जरूरत और इच्छा का अंतर धुँधला कर सकती है। विशेषकर बच्चे विज्ञापन में दिखाए गए दावों को आसानी से सच मान सकते हैं।

बढ़ती उपभोग-प्रवृत्ति परिवार के बजट पर भी दबाव डालती है। केवल छूट देखकर अनावश्यक सामान खरीदना बचत नहीं है। दिखावटी जीवनशैली की होड़ और रूप-रंग से जुड़ी संकीर्ण धारणाओं को बढ़ावा देने वाले विज्ञापन भी समाज पर प्रतिकूल असर डालते हैं।

जागरूक उपभोक्ता को किसी दावे को आँख मूँदकर स्वीकार नहीं करना चाहिए। खरीदने से पहले अपनी जरूरत, वस्तु की गुणवत्ता, कीमत और बिक्री की शर्तों पर विचार करना आवश्यक है। अलग-अलग विकल्पों की तुलना तथा उत्पाद पर दी गई जानकारी पढ़ना उपयोगी आदतें हैं। विज्ञापनदाताओं को भी तथ्यपूर्ण, स्पष्ट और सामाजिक रूप से जिम्मेदार संदेश देने चाहिए।

विज्ञापन उपयोगी सूचना और जनजागरण का प्रभावशाली माध्यम बन सकते हैं, यदि उनमें सत्य और उत्तरदायित्व हो। हमारा विवेक ही तय करता है कि विज्ञापन हमारे निर्णय में सहायता करेंगे या हमें अनावश्यक उपभोग की ओर ले जाएँगे। इसलिए आकर्षण के साथ तथ्य देखना और इच्छा के साथ आवश्यकता समझना जरूरी है।

चरण 3: निष्कर्ष विज्ञापन के लाभों का उपयोग करते हुए उसके दावों को परखना आवश्यक है। तथ्यपूर्ण विज्ञापन और जागरूक उपभोक्ता मिलकर जिम्मेदार बाजार तथा संतुलित उपभोग को बढ़ावा देते हैं।

त्वरित सुझाव: 'विज्ञापन और हम' में केवल विज्ञापन के दोष न गिनाएँ; सूचना, जनहित, भ्रामक दावों और अपनी खरीदारी की जिम्मेदारी को जोड़कर संतुलित विवेचन करें।

3(घ). नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए — विषय (घ): कटते जंगल, बढ़ता प्रदूषण [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पर्यावरण संबंधी निबंध में समस्या के कारण, उसके प्रभाव और समाधान को तार्किक क्रम में प्रस्तुत किया जाता है।
- वन वायु, जल, मिट्टी और जीव-जगत के संतुलन में योगदान देते हैं। वनों की कटाई पर्यावरण की प्रदूषण सहने और कम करने की क्षमता घटाती है।

चरण 1: निबंध का प्रारूप और रूपरेखा बनाएँ विषय को शीर्षक बनाकर वन और जीवन के संबंध से भूमिका लिखें। उसके बाद कटाई के कारण, वायु-प्रदूषण और जलवायु पर प्रभाव, मिट्टी तथा जैव-विविधता की क्षति और संरक्षण के उपायों पर अलग अनुच्छेद रखें। प्रदूषण के अन्य स्रोतों का भी उल्लेख करें, ताकि जंगलों की कटाई को उसका एकमात्र कारण न बताया जाए। समापन में नागरिक और सामूहिक जिम्मेदारी स्पष्ट करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध लिखें **कटते जंगल, बढ़ता प्रदूषण**

जंगल केवल पेड़ों का समूह नहीं, बल्कि जीवन को सहारा देने वाला समृद्ध संसार हैं। वे अनेक जीवों को आश्रय देते हैं, मिट्टी को सँभालते हैं और पर्यावरण के संतुलन में सहायता करते हैं। फिर भी बढ़ती आबादी और संसाधनों की माँग के बीच जंगल लगातार दबाव झेल रहे हैं। कटते जंगल और बढ़ता प्रदूषण हमारे विकास की दिशा पर गंभीर प्रश्न उठाते हैं।

खेती, सड़क, आवास और उद्योग के विस्तार के लिए वन-भूमि का उपयोग किया जाता है। लकड़ी की अत्यधिक माँग, अवैध कटाई और आग से भी जंगल नष्ट होते हैं। विकास की आवश्यकताओं को नकारा नहीं जा सकता, परंतु योजनाओं में प्रकृति की सीमा और भविष्य की जरूरतों की उपेक्षा भारी पड़ती है।

वृक्ष प्रकाश-संश्लेषण के दौरान कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। वे धूल के कुछ कणों को रोकने तथा आसपास के वातावरण को ठंडा रखने में भी सहायक होते हैं। पेड़ कटने से ये लाभ घटते हैं। जंगल जलाए जाने पर धुआँ और कार्बन डाइऑक्साइड वातावरण में पहुँचते हैं। वनों का विनाश इस प्रकार वायु की गुणवत्ता और जलवायु, दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

जंगलों के नष्ट होने से मिट्टी का कटाव बढ़ता है। वर्षा के साथ बहकर आने वाली मिट्टी जलाशयों में गाद जमा करती है और जल की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है। अनेक जीव अपना आवास खो देते हैं तथा स्थानीय जलचक्र पर भी असर पड़ता है। वाहनों और

कारखानों का धुआँ, कचरा और गंदा पानी प्रदूषण के दूसरे प्रमुख स्रोत हैं; घटती हरियाली इन समस्याओं से निपटने की प्राकृतिक क्षमता भी कम करती है।

समाधान के लिए मौजूदा जंगलों की रक्षा को प्राथमिकता देनी होगी। स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल पौधे लगाना और उनके बड़े होने तक देखभाल करना जरूरी है। अवैध कटाई रोकने, विकास-योजनाओं के पर्यावरणीय प्रभाव समझने और स्थानीय समुदायों को संरक्षण में सहभागी बनाने की आवश्यकता है। साथ ही स्वच्छ ऊर्जा, सार्वजनिक परिवहन और कचरे के उचित प्रबंधन से प्रदूषण के स्रोत घटाने होंगे।

हर नागरिक कागज और लकड़ी की बर्बादी रोककर तथा हरियाली की रक्षा करके योगदान दे सकता है। स्वस्थ पर्यावरण विकास की बाधा नहीं, उसका आधार है। जंगल बचाने का अर्थ अपने और आने वाली पीढ़ियों के जीवन की रक्षा करना है।

चरण 3: निष्कर्ष वन-संरक्षण और प्रदूषण-नियंत्रण पर एक साथ काम करना आवश्यक है। मौजूदा जंगलों की रक्षा, पौधों की सतत देखभाल और प्रदूषण के स्रोतों में कमी से पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: कारण, प्रभाव और उपाय का क्रम रखें; केवल पौधे लगाने की बात न करें, पुराने जंगलों की रक्षा और लगाए गए पौधों की देखभाल भी समाधान में जोड़ें।

4. पुरातात्त्विक महत्त्व के स्थानों पर हो रहे अनधिकृत कब्जे की प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए रोकने के समुचित उपाय करने हेतु क्षेत्रीय पुलिस अधिकारी को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रशासनिक अधिकारी को लिखे गए पत्र में समस्या का स्पष्ट परिचय, उसके दुष्परिणाम और अपेक्षित कार्रवाई विनम्र तथा तथ्यपरक भाषा में रखी जाती है।
- पुरातात्त्विक स्थल सार्वजनिक सांस्कृतिक धरोहर हैं। उनके संरक्षण के लिए पुलिस, स्थानीय प्रशासन और पुरातत्त्व विभाग के समन्वय का अनुरोध उचित है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निश्चित कीजिए प्रेषक का पता और दिनांक लिखने के बाद क्षेत्रीय पुलिस अधिकारी का पद तथा कार्यालय लिखेंगे। विषय में पुरातात्त्विक स्थलों पर अनधिकृत कब्जे रोकने की माँग स्पष्ट होगी। संबोधन के बाद समस्या, चिंता और उपाय क्रम से रखेंगे तथा अंत में विनम्र समापन और नाम देंगे।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाइए पत्र में अवैध निर्माण से ऐतिहासिक स्वरूप को नुकसान और नागरिकों के आवागमन में बाधा की चर्चा करेंगे। स्थलों के निरीक्षण, नियमित गश्त और संबंधित विभाग के सहयोग से विधिसम्मत कार्रवाई का अनुरोध करेंगे। किसी अज्ञात व्यक्ति पर आरोप लगाने के बजाय बढ़ती प्रवृत्ति और उसके निवारण पर ध्यान रखेंगे।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र लिखिए 24, शांति नगर
आगरा
15 मार्च, 2014
सेवा में,
क्षेत्रीय पुलिस अधिकारी
शांति नगर क्षेत्र, आगरा
विषय: पुरातात्त्विक स्थलों पर अनधिकृत कब्जे रोकने के संबंध में।
महोदय,
मैं आपके क्षेत्र का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र के पुरातात्त्विक महत्त्व के स्थानों के आसपास अनधिकृत कब्जे और अवैध निर्माण बढ़ रहे हैं। कुछ स्थानों पर अस्थायी दुकानें तथा निर्माण सामग्री रखे जाने से लोगों का आवागमन बाधित होता है। ऐसी गतिविधियाँ ऐतिहासिक धरोहर की सुंदरता और उसके मूल स्वरूप के लिए गंभीर खतरा हैं।

ये स्थल हमारे इतिहास के साक्षी और भावी पीढ़ियों की धरोहर हैं। समय रहते संरक्षण नहीं हुआ तो इन्हें अपूरणीय क्षति हो सकती है। अतः आपसे अनुरोध है कि संबंधित स्थलों का निरीक्षण करवाएँ और नियमित पुलिस गश्त की व्यवस्था करें। पुरातत्त्व विभाग तथा स्थानीय प्रशासन के सहयोग से अतिक्रमण चिह्नित करके नियमानुसार हटवाए जाएँ। नए अवैध निर्माण रोकने तथा शिकायतों पर शीघ्र कार्रवाई करने की व्यवस्था भी आवश्यक है।

आशा है कि आप इस समस्या को गंभीरता से लेकर शीघ्र समुचित कदम उठाएँगे।

धन्यवाद।

भवदीय

अजय कुमार

चरण 4: निष्कर्ष इस पत्र में ऐतिहासिक धरोहर के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए क्षेत्रीय पुलिस अधिकारी से निरीक्षण, गश्त और संबंधित विभागों के सहयोग से अनधिकृत कब्जे रोकने का स्पष्ट अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: विषय में समस्या और अपेक्षित कार्रवाई दोनों रखें। पुलिस अधिकारी को लिखते समय उपायों को निरीक्षण, सुरक्षा और विधिसम्मत कार्रवाई से जोड़ें।

अथवा

4. प्लास्टिक थैलियों के प्रयोग पर कानूनी पाबंदी लगाए जाने पर भी उनके बढ़ते प्रयोग पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए और एक सुझाव भी दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखे गए पत्र का उद्देश्य किसी सार्वजनिक समस्या की ओर समाज और प्रशासन का ध्यान आकर्षित करना है। भाषा औपचारिक, संयत और आग्रहपूर्ण होनी चाहिए।
- पत्र में प्रतिबंध के बावजूद प्लास्टिक थैलियों के बढ़ते उपयोग पर चिंता तथा उसे कम करने का एक स्पष्ट, व्यावहारिक सुझाव देना आवश्यक है।

चरण 1: औपचारिक प्रारूप निर्धारित कीजिए पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, संपादक का पद, समाचार पत्र का नाम और उसका पता देंगे। विषय में प्लास्टिक थैलियों के बढ़ते प्रयोग का उल्लेख करेंगे। संबोधन के बाद समस्या और सुझाव रखेंगे। अंत में पत्र प्रकाशित करने का अनुरोध, धन्यवाद और प्रेषक का नाम लिखेंगे।

चरण 2: मुख्य विचारों को क्रम दीजिए पहले बताएँगे कि कानूनी पाबंदी होने के बावजूद थैलियों का इस्तेमाल जारी है। फिर नालियों के अवरुद्ध होने, पर्यावरण प्रदूषण और पशुओं को हानि की चर्चा करेंगे। सुझाव के रूप में बाजारों में कपड़े के पुनः उपयोग योग्य थैले सुलभ कराने की योजना देंगे। नागरिकों और दुकानदारों की सहभागिता से यह सुझाव व्यवहार में आ सकता है।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र लिखिए 18, विकास नगर
नई दिल्ली
15 मार्च, 2014

सेवा में,
संपादक महोदय
दैनिक जागरण
नई दिल्ली

विषय: प्रतिबंध के बावजूद प्लास्टिक थैलियों के बढ़ते प्रयोग पर चिंता।

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार पत्र के माध्यम से मैं संबंधित अधिकारियों तथा नागरिकों का ध्यान प्लास्टिक थैलियों के बढ़ते प्रयोग की ओर

आकर्षित करना चाहता हूँ। कानूनी पाबंदी के बावजूद बाजारों में इन थैलियों का उपयोग हो रहा है। दुकानदार सामान देने में इनका प्रयोग करते हैं और ग्राहक भी सुविधा के कारण इन्हें स्वीकार कर लेते हैं।

उपयोग के बाद फेंकी गई थैलियाँ नालियों में फँसकर जलनिकासी रोकती हैं। मिट्टी और जल का प्रदूषण बढ़ता है तथा भोजन के साथ इन्हें निगलने वाले पशुओं का जीवन भी संकट में पड़ जाता है। केवल प्रतिबंध की घोषणा से समस्या का समाधान संभव नहीं है; लोगों की आदतों में परिवर्तन भी आवश्यक है।

मेरा सुझाव है कि बाजार समितियाँ प्रत्येक बाजार में सस्ती, पुनः उपयोग योग्य कपड़े की थैलियाँ उपलब्ध कराने की व्यवस्था करें। दुकानदार ग्राहकों को इन्हीं का उपयोग करने के लिए प्रेरित करें। इससे लोगों को सुविधाजनक विकल्प मिलेगा और प्लास्टिक थैलियों पर निर्भरता घटेगी।

कृपया इस पत्र को प्रकाशित कर जनजागरूकता बढ़ाने में सहयोग दें।

धन्यवाद।
भवदीय
रोहित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में प्रतिबंध के बावजूद प्लास्टिक थैलियों के प्रयोग से होने वाली हानियों पर चिंता व्यक्त की गई है और बाजारों में सस्ती कपड़े की थैलियाँ उपलब्ध कराने का व्यावहारिक सुझाव दिया गया है।

त्वरित सुझाव: संपादक को समस्या बताते समय जनहित का पक्ष स्पष्ट करें और सुझाव ऐसा दें जिसे दुकानदार तथा ग्राहक वास्तव में अपना सकें।

5(क)(i). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए: (i) भारत में पहला छापाखाना कब और कहाँ खुला? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- छापाखाने का इतिहास मुद्रित जनसंचार माध्यमों के विकास से संबंधित है। यहाँ भारत में मुद्रण के आरंभ का तथ्य पूछा गया है।
- प्रश्न में समय और स्थान दोनों माँगे गए हैं, इसलिए उत्तर में वर्ष के साथ उस स्थान का नाम भी लिखना आवश्यक है।

चरण 1: पूछा गया ऐतिहासिक तथ्य पहचानिए यहाँ किसी समाचार पत्र के प्रकाशन की शुरुआत नहीं, बल्कि भारत में पहले छापाखाने की स्थापना पूछी गई है। इसलिए उत्तर को छापाखाने के इतिहास तक सीमित रखेंगे।

चरण 2: वर्ष और स्थान का संबंध स्पष्ट कीजिए भारत में मुद्रण की शुरुआत गोवा में पुर्तगालियों द्वारा लाए गए छापाखाने से हुई थी। इसकी स्थापना का वर्ष 1556 ईस्वी है। संक्षिप्त उत्तर में इन्हीं दोनों तथ्यों को एक वाक्य में जोड़ना पर्याप्त है।

चरण 3: निष्कर्ष भारत में पहला छापाखाना 1556 ईस्वी में गोवा में खुला था।

त्वरित सुझाव: 'कब और कहाँ' देखकर उत्तर में दो बातें जाँचें: वर्ष 1556 ईस्वी और स्थान गोवा; केवल एक तथ्य लिखकर उत्तर अधूरा न छोड़ें।

5(क)(ii). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए: (ii) किन्हीं दो राष्ट्रीय समाचार पत्रों के नाम लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राष्ट्रीय समाचार पत्र देश के विभिन्न क्षेत्रों की घटनाओं और राष्ट्रीय महत्त्व के विषयों का समाचार तथा विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं।
- प्रश्न में किन्हीं दो नामों की माँग है। इसलिए दो उपयुक्त समाचार पत्रों के नाम स्पष्ट लिखना ही मुख्य अपेक्षा है।

चरण 1: माँगे गए माध्यम को पहचानिए यहाँ मुद्रित समाचार पत्रों के उदाहरण देने हैं। समाचार चैनल, रेडियो केंद्र या पत्रिका का नाम लिखना इस प्रश्न का उपयुक्त उत्तर नहीं होगा।

चरण 2: दो परिचित उदाहरण चुनिए 'द हिंदू' तथा 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' राष्ट्रीय स्तर के प्रसिद्ध समाचार पत्र हैं। प्रश्न ने किसी विशेष भाषा की शर्त नहीं दी है, इसलिए अंग्रेज़ी में प्रकाशित इन समाचार पत्रों के नाम भी स्वीकार्य उदाहरण हैं। नामों को स्पष्ट रूप में लिखेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष दो राष्ट्रीय समाचार पत्रों के नाम हैं: 'द हिंदू' और 'द टाइम्स ऑफ इंडिया'।

त्वरित सुझाव: समाचार पत्र का नाम चुनते समय जाँचें कि वह अखबार हो, समाचार चैनल या पत्रिका नहीं; यहाँ केवल दो सही नाम लिखना पर्याप्त है।

5(क)(iii). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए: (iii) पेज थ्री पत्रकारिता क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पेज थ्री पत्रकारिता का संबंध चर्चित हस्तियों के सामाजिक जीवन, पार्टियों, फैशन और मनोरंजन जगत की गतिविधियों से है।
- इसकी पहचान समाचार की विषयवस्तु से होती है; केवल किसी अखबार के तीसरे पृष्ठ पर छपना इसकी पूरी परिभाषा नहीं है।

चरण 1: इस पत्रकारिता का केंद्र पहचानिए इसमें फिल्मी सितारों, समाज के प्रसिद्ध लोगों और उच्चवर्गीय सामाजिक आयोजनों की खबरों तथा तस्वीरों को प्रमुखता दी जाती है। इनके पहनावे, जीवनशैली और मेलजोल का विवरण पाठकों के आकर्षण का विषय बनता है।

चरण 2: परिभाषा के आवश्यक तत्व जोड़िए उत्तर में हस्तियों, पार्टियों और ग्लैमर से जुड़ी गतिविधियों का उल्लेख करना चाहिए। सामान्य राजनीतिक, आर्थिक या विकास संबंधी समाचारों की रिपोर्टिंग को मात्र पृष्ठ संख्या के आधार पर पेज थ्री पत्रकारिता नहीं कहा जाता।

चरण 3: निष्कर्ष चर्चित हस्तियों के सामाजिक जीवन, पार्टियों, फैशन और ग्लैमर से जुड़ी खबरों तथा तस्वीरों को प्रमुखता देने वाली पत्रकारिता पेज थ्री पत्रकारिता कहलाती है।

त्वरित सुझाव: 'पेज थ्री' को केवल तीसरा पृष्ठ न समझें; परिभाषा लिखते समय हस्तियाँ, पार्टियाँ और ग्लैमर जैसे विषय अवश्य शामिल करें।

5(क)(iv). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए: (iv) एनकोडिंग से आप क्या समझते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संचार में प्रेषक अपने मन के विचार को ऐसे संदेश में बदलता है जिसे किसी माध्यम से भेजा जा सके।
- भाषा, शब्द, चित्र और संकेत संदेश को अभिव्यक्त करने के साधन हैं।

चरण 1: विचार से संदेश बनने की प्रक्रिया समझें मन में आया विचार अपने आप दूसरे व्यक्ति तक नहीं पहुँचता। प्रेषक उसे बोलने, लिखने या संकेत देने योग्य रूप प्रदान करता है। इसी के लिए वह उपयुक्त शब्दों अथवा प्रतीकों का चयन करता है।

चरण 2: उदाहरण से पहचानें किसी से मिलने की इच्छा को 'कल मिलते हैं' शब्दों में लिखना एनकोडिंग का उदाहरण है। प्राप्तकर्ता द्वारा इन शब्दों का अर्थ समझना डिकोडिंग कहलाता है। दोनों संचार की अलग प्रक्रियाएँ हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्रेषक द्वारा अपने विचारों या भावों को भाषा, शब्दों अथवा संकेतों के रूप में बदलने की प्रक्रिया एनकोडिंग कहलाती है।

त्वरित सुझाव: एनकोडिंग याद रखने के लिए 'विचार को संकेत देना' और डिकोडिंग के लिए 'संकेत का अर्थ समझना' ध्यान में रखें।

5(क)(v). नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए: (v) फ़ीचर किसे कहा जाता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर पत्रकारिता की ऐसी रचना है जिसमें तथ्य के साथ विषय का मानवीय पक्ष उभरता है।
- इसकी शैली रोचक, सहज और चित्रात्मक होती है, किंतु इसमें तथ्य गढ़े नहीं जाते।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति पहचानें फ़ीचर किसी घटना, व्यक्ति, स्थान या सामाजिक विषय को विस्तार से प्रस्तुत करता है। लेखक उसके परिवेश, विशेषताओं और लोगों पर पड़ने वाले प्रभावों को इस तरह सामने रखता है कि पाठक विषय से जुड़ सके।

चरण 2: समाचार से अंतर समझें समाचार का प्रमुख उद्देश्य ताज़ा घटना की आवश्यक सूचना देना है। फ़ीचर उस विषय के अनुभवों, पृष्ठभूमि और मानवीय संवेदनाओं को भी महत्त्व देता है। इसलिए उसमें वर्णनात्मक और आकर्षक भाषा का प्रयोग किया जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी विषय, घटना, व्यक्ति या स्थान का तथ्यपूर्ण, रोचक और संवेदनात्मक शैली में किया गया विस्तृत प्रस्तुतीकरण फ़ीचर कहलाता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर की परिभाषा लिखते समय 'तथ्यपूर्ण', 'रोचक प्रस्तुति' और 'मानवीय संवेदना' को एक साथ जोड़ें।

5(ख). 'महानगरों के विद्यालयों में प्रवेश की समस्या' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में सामाजिक समस्या के तथ्यों के साथ उससे प्रभावित लोगों की चिंता और अनुभवों को स्थान दिया जाता है।
- आकर्षक शीर्षक, विषय से जोड़ता आरंभ, कारणों और प्रभावों का विस्तार तथा विचारोत्तेजक समापन इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं।

चरण 1: फ़ीचर का प्रारूप तय करें विद्यालय के द्वार पर प्रवेश की प्रतीक्षा को आरंभ का केंद्र बनाएँ। शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दें और अनुच्छेदों में समस्या के अलग-अलग पक्ष विकसित करें। भाषा संवेदनशील और सहज रखें; किसी विद्यालय के विरुद्ध अप्रमाणित आरोप या मनगढ़ंत आँकड़े न दें।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाएँ पहले बच्चों और अभिभावकों की आशा तथा चिंता सामने रखें। फिर बढ़ती आबादी, अच्छे विद्यालयों की असमान उपलब्धता, सीमित सीटों, महँगी शिक्षा और प्रवेश की जटिल प्रक्रियाओं का उल्लेख करें। अंत में पारदर्शी प्रवेश तथा आसपास के सरकारी विद्यालयों की गुणवत्ता सुधारने जैसे उपाय सुझाएँ।

चरण 3: पूर्ण नमूना फ़ीचर लिखें **नन्हे सपने, ऊँचे दरवाज़े**

लेखक: एक विद्यार्थी

स्कूल की घंटी बच्चों को कक्षा में बुलाती है, लेकिन महानगरों के अनेक परिवारों के लिए उस कक्षा तक पहुँचना ही बड़ी परीक्षा बन जाता है। प्रवेश का मौसम आते ही घरों में आवेदन-पत्रों, आवश्यक प्रमाणपत्रों और अंतिम तिथियों की चर्चा शुरू हो जाती है। बच्चे नए बस्ते के सपने देखते हैं और माता-पिता मनपसंद विद्यालय में जगह मिलने की चिंता करते हैं।

महानगरों की बढ़ती आबादी के साथ अच्छी शिक्षा की माँग बढ़ी है। मगर गुणवत्तापूर्ण विद्यालय सभी मोहल्लों में समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं। कुछ प्रतिष्ठित विद्यालयों में सीमित सीटों के लिए बड़ी संख्या में आवेदन पहुँचते हैं। ऐसे में प्रवेश न मिलना बच्चे की योग्यता का निर्णय नहीं, अवसरों की कमी का संकेत भी है।

आवेदन की जटिल प्रक्रिया, अलग-अलग प्रवेश नियम और अधिक शुल्क परिवारों की परेशानी बढ़ाते हैं। कम आय वाले अभिभावकों के सामने खर्च जुटाने का प्रश्न खड़ा होता है। दूर के विद्यालय में प्रवेश मिलने पर लंबी यात्रा और यातायात का बोझ बच्चे के हिस्से आता है। जिस आयु में उसे खेलते हुए सीखना चाहिए, उसी समय उसके आसपास तुलना और प्रतिस्पर्धा का वातावरण बनने लगता है।

इस समस्या का समाधान केवल नए आवेदन-पत्र बाँटना नहीं है। प्रवेश के नियम स्पष्ट हों, शुल्क संबंधी जानकारी पहले मिले और चयन प्रक्रिया पारदर्शी हो। साथ ही सरकारी तथा स्थानीय विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षक, पुस्तकालय, सुरक्षित परिसर और सीखने की बेहतर

सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ। तब कुछ चुनिंदा विद्यालयों पर पड़ने वाला दबाव भी घटेगा।

विद्यालय का द्वार बच्चे के सपनों की शुरुआत होना चाहिए। हमारी शिक्षा व्यवस्था की सफलता तभी मानी जाएगी जब हर मोहल्ले का बच्चा अपने पास के विद्यालय में सम्मान और विश्वास के साथ सीख सके।

चरण 4: निष्कर्ष इस फ़ीचर में प्रवेश की समस्या को परिवारों की चिंता से जोड़कर उसके कारण, बच्चों पर प्रभाव और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किए गए हैं। आकर्षक शीर्षक तथा संवेदनशील समापन इसके केंद्रीय विचार को स्पष्ट करते हैं।

त्वरित सुझाव: इस विषय के फ़ीचर में केवल शुल्क की शिकायत न लिखें; सीटों की कमी, बच्चे की मनःस्थिति और स्थानीय विद्यालयों की गुणवत्ता को भी जोड़ें।

अथवा

5(ख). 'केदारनाथ में जल प्रलय' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आपदा पर लिखा फ़ीचर घटना की पृष्ठभूमि के साथ पीड़ितों की मानवीय स्थिति और समाज के लिए उसकी सीख सामने लाता है।
- संवेदनशील वर्णन तथ्यसम्मत होना चाहिए; अप्रमाणित आँकड़े, गढ़े हुए प्रत्यक्षदर्शी कथन और सनसनी से बचना चाहिए।

चरण 1: प्रस्तुति का प्रारूप बनाएँ प्रभावशाली शीर्षक और लेखक के नाम के बाद केदारनाथ की परिचित तीर्थस्थली तथा आपदा के बीच संबंध स्थापित करें। घटना के वर्णन में पीड़ितों के प्रति सहानुभूति रखें। समापन को प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी और बेहतर आपदा तैयारी से जोड़ें।

चरण 2: आवश्यक विषयबिंदु चुनें जून 2013 की भीषण वर्षा, बाढ़ और मलबे से हुई तबाही का उल्लेख करें। इसके बाद बिछड़े परिवारों, अवरुद्ध मार्गों, राहत-बचाव कार्य तथा स्थानीय लोगों की आजीविका का पक्ष लें। पहाड़ों में अनियोजित निर्माण से बढ़ते जोखिम और सुरक्षित पुनर्निर्माण की आवश्यकता समझाएँ।

चरण 3: पूर्ण नमूना फ़ीचर लिखें **केदारनाथ: जल के सैलाब में डूबती उम्मीदें**

लेखक: एक विद्यार्थी

हिमालय की गोद में बसा केदारनाथ आस्था और प्राकृतिक सौंदर्य का केंद्र है। तीर्थयात्रियों की चहल-पहल और मंदिर की घंटियों से गूँजने वाला यह क्षेत्र जून 2013 में ऐसी आपदा से गुज़रा, जिसने पूरे देश को झकझोर दिया। भीषण वर्षा, बाढ़ और मलबे के सैलाब ने यात्रा-पथों तथा बस्तियों को भारी क्षति पहुँचाई।

मंदाकिनी घाटी में उमड़ता पानी अपने साथ पत्थर और मलबा बहा लाया। अनेक मकान, दुकानें और रास्ते तबाह हो गए। सुरक्षित स्थान की तलाश में भटकते लोगों के सामने भोजन, आश्रय और उपचार का संकट खड़ा हो गया। किसी परिवार का सदस्य लापता था तो किसी की जीवन भर की कमाई बह गई थी। यह केवल इमारतों का विनाश नहीं, अनगिनत जीवनों में फैलती असुरक्षा और शोक की त्रासदी थी।

दुर्गम पहाड़ी रास्तों और प्रतिकूल मौसम ने बचाव कार्य कठिन बना दिया। सेना, वायुसेना, राहतकर्मियों तथा स्थानीय लोगों ने फँसे हुए यात्रियों को निकालने और आवश्यक सहायता पहुँचाने में योगदान दिया। अनजान लोगों की मदद के लिए बढ़ते हाथों ने इस गहरे संकट में मानवीय करुणा की शक्ति दिखाई।

आपदा के बाद चुनौती केवल यात्रा फिर शुरू करने की नहीं थी। स्थानीय परिवारों के घर, रोज़गार और विश्वास को भी फिर खड़ा करना था। पर्यटन तथा तीर्थयात्रा से जुड़े छोटे व्यवसायों के उजड़ने का प्रभाव लंबे समय तक बना रहा। पुनर्निर्माण के साथ सुरक्षा और आजीविका पर ध्यान देना आवश्यक था।

यह त्रासदी पहाड़ों की संवेदनशीलता समझने की चेतावनी भी है। नदी किनारे अनियोजित निर्माण नुकसान का खतरा बढ़ाता है। सुरक्षित निर्माण, मौसम संबंधी चेतावनियों का प्रभावी प्रसार, यात्रियों की संख्या का सुविचारित प्रबंधन और स्थानीय स्तर पर बचाव प्रशिक्षण जरूरी हैं।

केदारनाथ हमें याद दिलाता है कि प्रकृति के बीच विकास करते समय उसकी सीमाओं को समझना होगा। श्रद्धा के साथ सावधानी और

पुनर्निर्माण के साथ पर्यावरण की रक्षा जुड़ें, तभी ऐसी त्रासदियों से होने वाले नुकसान को कम किया जा सकेगा।

चरण 4: निष्कर्ष इस फ़ीचर में केदारनाथ की जल प्रलय का मानवीय चित्र प्रस्तुत करते हुए राहत, पुनर्वास और पर्यावरणसम्मत विकास की आवश्यकता स्पष्ट की गई है। इसका उद्देश्य संवेदना जगाने के साथ आपदा से सीखने की प्रेरणा देना है।

त्वरित सुझाव: आपदा के फ़ीचर में गढ़े हुए मृत्यु-आँकड़े या उद्धरण न जोड़ें; घटना, लोगों की पीड़ा, राहत और भविष्य की सुरक्षा को क्रम से लिखें।

6. 'नक्सलवाद की समस्या' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी सामाजिक समस्या का परिचय, उसके कारण, प्रभाव तथा व्यावहारिक समाधान क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किए जाते हैं।
- नक्सलवाद पर लिखते समय हिंसा का विरोध करते हुए उन सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर भी विचार करना चाहिए, जिनका लाभ उठाकर हिंसक आंदोलन फैलते हैं।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति आलेख का उपयुक्त शीर्षक और लेखक का नाम दें। भूमिका में समस्या का स्वरूप बताएँ। मुख्य भाग में गरीबी, शोषण, विकास की कमी और प्रशासन से दूरी जैसे कारणों तथा हिंसा के दुष्परिणामों की विवेचना करें। अंत में सुरक्षा, न्याय और विकास को जोड़ने वाले समाधान प्रस्तुत करें। भाषा तथ्यपरक और संतुलित रखें।

चरण 2: पूर्ण नमूना आलेख **नक्सलवाद की समस्या**

लेखक: अजय कुमार

नक्सलवाद देश के लिए एक गंभीर सामाजिक और आंतरिक सुरक्षा संबंधी समस्या है। अन्याय और शोषण के विरोध के नाम पर अपनाई गई हिंसा अंततः सामान्य लोगों के जीवन को ही असुरक्षित बनाती है। इसलिए इस समस्या को समझने के लिए हिंसक गतिविधियों के साथ उन परिस्थितियों पर भी ध्यान देना आवश्यक है, जिनमें लोगों का व्यवस्था से विश्वास उठने लगता है।

दूरदराज के अनेक क्षेत्रों में गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी लोगों के जीवन को कठिन बनाती है। भूमि और वन संसाधनों से जुड़े विवाद, शोषण तथा विस्थापन की पीड़ा असंतोष बढ़ाते हैं। जब शिकायतों की सुनवाई नहीं होती और विकास का लाभ स्थानीय लोगों तक नहीं पहुँचता, तब हिंसक संगठन इस असंतोष का उपयोग अपने प्रभाव के विस्तार के लिए कर सकते हैं। किंतु किसी भी अन्याय का समाधान निर्दोष लोगों की हत्या या भय का वातावरण बनाना नहीं हो सकता।

हिंसा के कारण स्थानीय व्यापार, आवागमन और पढ़ाई प्रभावित होते हैं। सड़कें, संचार व्यवस्था और सार्वजनिक सुविधाएँ बाधित होने से विकास की गति और धीमी पड़ जाती है। सबसे अधिक नुकसान उन्हीं गरीब परिवारों को होता है, जिनके हितों की रक्षा का दावा किया जाता है। भय और अविश्वास समाज तथा प्रशासन के बीच दूरी बढ़ाते हैं।

इस समस्या के समाधान के लिए सुरक्षा के साथ न्यायपूर्ण विकास भी आवश्यक है। हिंसक गतिविधियों पर कानून के अनुसार प्रभावी नियंत्रण हो और सामान्य नागरिकों के अधिकार सुरक्षित रहें। विद्यालय, अस्पताल, सड़कें तथा रोजगार के अवसर स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप बढ़ाए जाएँ। भूमि संबंधी शिकायतों का निष्पक्ष निवारण हो तथा विस्थापित परिवारों को उचित पुनर्वास मिले। भ्रष्टाचार रोकना और प्रशासन को जवाबदेह बनाना भी जरूरी है।

स्थानीय समुदायों की भागीदारी से योजनाएँ बनें और उनकी समस्याएँ सम्मानपूर्वक सुनी जाएँ। हिंसा छोड़ने वालों के लिए समाज की मुख्यधारा में लौटने के अवसर उपलब्ध हों। न्याय, विश्वास और विकास की संयुक्त पहल ही नक्सलवाद की जड़ों को कमजोर करके स्थायी शांति स्थापित कर सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख में नक्सलवाद के कारण, हिंसा के प्रभाव और न्यायपूर्ण विकास पर आधारित समाधान स्पष्ट किए गए हैं। समस्या की गंभीरता के साथ नागरिकों की सुरक्षा और अधिकारों का संतुलित विचार आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: आलेख की योजना बनाते समय समस्या, कारण, प्रभाव और समाधान के चार बिंदु लिख लें; नमूना उत्तर में इन्हें क्रम से विकसित करें।

अथवा

6. 'उजड़ते गाँव-उमड़ते शहर' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय का सामाजिक संदर्भ, कारण, प्रभाव और समाधान तर्कपूर्ण अनुच्छेदों में प्रस्तुत किए जाते हैं। शीर्षक और लेखक का नाम उसके प्रारूप को स्पष्ट करते हैं।
- गाँवों से शहरों की ओर पलायन का संबंध रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा और जीवन की बेहतर सुविधाओं की तलाश से है। असंतुलित विकास गाँव और शहर दोनों के लिए समस्याएँ पैदा करता है।

चरण 1: विषय की योजना और प्रारूप शीर्षक के बाद लेखक का नाम लिखें। भूमिका में गाँवों से शहरों की ओर पलायन का दृश्य प्रस्तुत करें। मुख्य भाग में पलायन के कारण, गाँवों पर प्रभाव तथा शहरों की समस्याएँ बताएँ। समापन में ग्रामीण रोजगार, आवश्यक सेवाओं और नियोजित शहरी विकास के उपाय रखें। शीर्षक का आशय प्रत्येक गाँव के पूरी तरह खाली हो जाने से नहीं, बल्कि बढ़ते पलायन से है।

चरण 2: पूर्ण नमूना आलेख **उजड़ते गाँव-उमड़ते शहर**

लेखिका: रचना शर्मा

गाँव की सूनी होती गलियाँ और शहर की बढ़ती भीड़ हमारे विकास की असमान तस्वीर प्रस्तुत करती हैं। जिन गाँवों को देश की जीवनरेखा कहा जाता है, वहाँ से अनेक लोग आज रोजगार और बेहतर जीवन की तलाश में शहरों की ओर जा रहे हैं। यह पलायन केवल स्थान बदलने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का संकेत भी है।

खेती से अनिश्चित आय, छोटे होते खेत और स्थानीय रोजगार की कमी ग्रामीण युवाओं को बाहर जाने के लिए विवश करती है। अच्छी शिक्षा, उपचार और अन्य सुविधाओं का अभाव भी उन्हें शहरों की ओर खींचता है। शहर अवसरों का आश्वासन देते हैं, इसलिए कठिन परिस्थितियों के बावजूद लोग वहाँ अपना भविष्य खोजते हैं। पढ़ाई या नौकरी के लिए जाना स्वाभाविक है, किंतु बुनियादी सुविधाओं के अभाव में गाँव छोड़ना चिंताजनक है।

पलायन से गाँवों में खेती और स्थानीय व्यवसायों के लिए आवश्यक श्रम की कमी हो सकती है। अनेक परिवारों में बुजुर्ग अकेले रह जाते हैं तथा सामुदायिक जीवन का उत्साह घटता है। पारंपरिक शिल्प और सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी प्रभावित होती हैं। दूसरी ओर शहरों पर आवास, पानी, बिजली, परिवहन और स्वास्थ्य सेवाओं का दबाव बढ़ता है। पर्याप्त साधन न होने पर अनेक प्रवासी असुरक्षित रोजगार और सुविधाहीन बस्तियों में रहने को मजबूर होते हैं।

समस्या का समाधान लोगों की आवाजाही रोकना नहीं, बल्कि उन्हें अपने क्षेत्र में सम्मानजनक जीवन के विकल्प देना है। गाँवों में सिंचाई, कृषि विपणन, लघु उद्योग और कौशल प्रशिक्षण की सुविधाएँ बढ़ाई जानी चाहिए। अच्छे विद्यालय, अस्पताल और संचार सुविधाएँ उपलब्ध हों। स्थानीय उत्पादों को बाजार मिले तथा युवाओं को उद्यम शुरू करने में सहायता दी जाए। छोटे कस्बों का विकास भी बड़े शहरों का दबाव कम कर सकता है।

शहरों में भी सस्ते आवास, सार्वजनिक परिवहन और आवश्यक सेवाओं की योजनाबद्ध व्यवस्था जरूरी है। गाँव और शहर एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। संतुलित विकास से ही गाँव जीवंत रहेंगे और शहर सबके लिए अधिक सुविधाजनक बन सकेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत आलेख पलायन के कारणों और उसके ग्रामीण तथा शहरी प्रभावों को जोड़ते हुए संतुलित क्षेत्रीय विकास का समर्थन करता है। स्थानीय अवसर और योजनाबद्ध शहरी सुविधाएँ समस्या के समाधान के प्रमुख आधार हैं।

त्वरित सुझाव: इस शीर्षक पर केवल शहरों की भीड़ न लिखें; गाँव खाली होने के कारण, दोनों क्षेत्रों पर प्रभाव और विकास के उपाय भी शामिल करें।

7(क). प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

मैं जगजीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

(क) जगजीवन का भार लिए फिरने से कवि का क्या आशय है? ऐसे में भी वह क्या कर लेता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कवि सांसारिक दायित्वों और कठिनाइयों के बीच भी अपने हृदय में प्रेम बनाए रखने की बात कहता है।
- पहली दो पंक्तियों में आए 'भार' और 'प्यार' का संबंध समझने से प्रश्न के दोनों पक्ष स्पष्ट होते हैं।

चरण 1: जगजीवन के भार का अर्थ 'मैं जगजीवन का भार लिए फिरता हूँ' में भार से आशय संसार में जीवन बिताने की जिम्मेदारियों, संघर्षों और कठिनाइयों से है। कवि भी सामाजिक जीवन से जुड़ा है, इसलिए उसके दायित्व और दुःख उससे अलग नहीं हैं। यहाँ भार का अर्थ किसी वस्तु का वास्तविक वजन नहीं, जीवन की चिंताओं का बोझ है।

चरण 2: भार के बीच प्रेम बनाए रखना 'फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ' से स्पष्ट है कि इन कठिनाइयों के बावजूद कवि अपने भीतर प्रेम और संवेदना बचाए रखता है। सांसारिक बोझ उसे नीरस या प्रेमहीन नहीं बना पाता। वह जीवन को प्रेम से अपनाता है और इसी स्नेह से उसके भावपूर्ण जीवन को शक्ति मिलती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय सांसारिक दायित्वों, संघर्षों और दुःखों का बोझ उठाने से है। इसके बावजूद वह जीवन में प्रेम बनाए रखता है और प्रेमपूर्ण जीवन जी लेता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो स्पष्ट हिस्से बनाएँ: पहले 'भार' का अर्थ बताएँ, फिर 'फिर भी' के आधार पर कवि की प्रेमपूर्ण जीवन-दृष्टि स्पष्ट करें।

7(ख). प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

मैं जगजीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

(ख) 'स्नेह-सुरा' से कवि का क्या आशय है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'स्नेह-सुरा' में प्रेम को मदिरा का रूप दिया गया है। यह रूपक प्रेम की गहरी अनुभूति और उसमें मग्न रहने की स्थिति व्यक्त करता है।
- कवि की प्रेममय आंतरिक दुनिया को अगली पंक्ति में व्यक्त संसार की चिंता न करने की भावना से जोड़कर समझना चाहिए।

चरण 1: स्नेह-सुरा का लाक्षणिक अर्थ 'स्नेह' का अर्थ प्रेम और 'सुरा' का अर्थ मदिरा है। कवि ने दोनों को जोड़कर प्रेमरूपी मदिरा का भाव व्यक्त किया है। यहाँ वास्तविक मदिरापान का वर्णन नहीं है; यह कहना है कि कवि प्रेम की अनुभूति में इस प्रकार डूबा रहता है कि उसका मन आनंद और आत्मीयता से भर जाता है।

चरण 2: कवि की मन:स्थिति से संबंध 'मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ' में प्रेम में निरंतर मग्न रहने की स्थिति प्रकट होती है। जैसे मदिरा का प्रभाव मनुष्य को बाहरी चिंताओं से बेपरवाह कर सकता है, वैसे ही प्रेम की मस्ती कवि को सांसारिक प्रशंसा और निंदा से ऊपर रखती है। इसलिए वह जग की चिंता किए बिना अपने मन के भावों का गान करता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'स्नेह-सुरा' का आशय प्रेमरूपी मदिरा से है। कवि प्रेम के आनंद में डूबा रहता है और उसके प्रभाव में सांसारिक चिंता तथा लोकमत की परवाह नहीं करता।

त्वरित सुझाव: पहले 'प्रेमरूपी मदिरा' लिखें और फिर उसका प्रभाव बताएँ; इसे वास्तविक नशे या शराब पीने की आदत का वर्णन न मानें।

7(ग). प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

मैं जगजीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए- जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्ति का आशय बताते समय उसके शब्दार्थ को आसपास की पंक्तियों से जोड़ना चाहिए। यहाँ जग का अर्थ संसार और पूछने का अर्थ मान्यता या सम्मान देना है।
- कवि संसार की पसंद के अनुरूप गाने वालों और अपने मन की सच्ची अनुभूति व्यक्त करने वाले व्यक्ति के बीच अंतर करता है।

चरण 1: पंक्ति का सामान्य अर्थ समझें जग उन्हीं लोगों को पूछता है जो जग की गाते हैं, अर्थात संसार प्रायः उन्हीं व्यक्तियों को प्रसिद्धि और सम्मान देता है जो उसकी रुचियों, विचारों और अपेक्षाओं के अनुरूप बोलते या रचना करते हैं। उनकी अभिव्यक्ति लोक-प्रशंसा प्राप्त करने का माध्यम बन जाती है।

चरण 2: कवि के दृष्टिकोण से आशय स्पष्ट करें इसके विपरीत कवि कहता है कि वह अपने मन का गान करता है। वह दूसरों की प्रशंसा पाने के लिए अपनी अनुभूतियों को नहीं बदलता। उसके लिए अपने भीतर के प्रेम और भावों की सच्ची अभिव्यक्ति अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस तुलना से समाज की स्वीकृति और कवि की स्वतंत्र आत्माभिव्यक्ति का अंतर उभरता है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय यह है कि संसार अपने अनुकूल बोलने और गाने वालों को महत्त्व देता है; कवि ऐसी मान्यता की चिंता किए बिना अपने मन के भाव व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: जग की गाते का अर्थ केवल संसार का वर्णन करना न लिखें; अगली पंक्ति से जोड़कर संसार की पसंद और कवि के मन का अंतर स्पष्ट करें।

7(घ). प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

मैं जगजीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

(घ) 'साँसों के तार' से कवि का क्या तात्पर्य है? आपके विचार से उन्हें किसने झंकृत किया होगा? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- साँसें जीवन का आधार हैं और तार वाद्ययंत्र में संगीत उत्पन्न करते हैं। कवि इन दोनों को जोड़कर जीवन की संवेदनशीलता का चित्र प्रस्तुत करता है।
- झंकृत होने का भाव प्रेम के स्पर्श से हृदय में उमंग और मधुर भावनाओं का जागना है।

चरण 1: साँसों के तार का तात्पर्य समझें साँसों के तार से कवि का तात्पर्य उसके जीवन और हृदय की संवेदनशील भावनाओं से है। उसने अपने जीवन को एक तारयुक्त वाद्य की तरह देखा है। जैसे तार छूने से मधुर ध्वनि उठती है, वैसे ही स्नेह का स्पर्श उसके अंतर्मन को भावनाओं से भर देता है। यहाँ तार वास्तविक साँसों की बनावट नहीं, जीवन-संगीत का काव्यात्मक रूप हैं।

चरण 2: झंकार उत्पन्न करने वाले का अनुमान लगाएँ पद्यांश में कवि जीवन में प्यार लिए फिरने और स्नेह-सुरा का पान करने की बात कहता है। इससे लगता है कि किसी प्रिय व्यक्ति के प्रेमपूर्ण स्पर्श या आत्मीय स्नेह ने उसके हृदय के तार झंकृत किए होंगे। उस प्रेम ने उसके जीवन में उल्लास, मधुरता और प्रेरणा भर दी है। कविता किसी व्यक्ति का नाम नहीं बताती, इसलिए उसका नाम जोड़ना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष साँसों के तार कवि के संवेदनशील जीवन और हृदय के प्रतीक हैं। उन्हें किसी प्रिय व्यक्ति के प्रेम और स्नेह ने झंकृत किया होगा।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों भाग अलग रखें: पहले जीवन-रूपी वाद्य का अर्थ, फिर पद्यांश के प्यार और स्नेह के आधार पर प्रिय के स्पर्श का अनुमान।

अथवा

7(क). अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर
रोग-शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।
(क) कवि अट्टालिकाओं को आतंक भवन क्यों मानता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादल राग में बादल क्रांति और सामाजिक परिवर्तन की चेतना जगाते हैं। अट्टालिकाएँ संपन्न तथा शोषक वर्ग की सत्ता और वैभव की प्रतीक हैं।
- आतंक-भवन कहने का आशय उस वैभव के भीतर छिपे भय तथा शोषणपूर्ण व्यवस्था को उजागर करना है।

चरण 1: अट्टालिकाओं के सामाजिक अर्थ को पहचानें अट्टालिकाएँ केवल ऊँची और भव्य इमारतें नहीं हैं। वे उस धनी वर्ग के ऐश्वर्य का संकेत करती हैं जिसकी समृद्धि गरीबों और श्रमिकों के शोषण पर टिकी है। इसीलिए उनका वैभव कवि को सुख और सौंदर्य का निष्कलंक रूप नहीं लगता; उसके पीछे पीड़ित जनों का दुःख भी दिखाई देता है।

चरण 2: आतंक और क्रांति का संबंध समझाएँ इन भवनों में रहने वाले संपन्न लोग क्रांति की गर्जना से भयभीत हैं। उन्हें आशंका है कि जाग्रत जनसमुदाय उनके धन, अधिकार और शोषण पर आधारित व्यवस्था को समाप्त कर देगा। बाहर से सुरक्षित दिखने वाली अट्टालिकाओं के भीतर यह भय व्याप्त है। कवि उन्हें आतंक-भवन कहकर इसी छिपे आतंक की ओर ध्यान खींचता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अट्टालिकाओं को आतंक-भवन मानता है क्योंकि उनमें शोषक धनिक रहते हैं, जो क्रांति से अपने वैभव और प्रभुत्व के नष्ट होने की आशंका से आतंकित हैं।

त्वरित सुझाव: अट्टालिका का उत्तर केवल बड़ी इमारत कहकर पूरा न करें; धनिक वर्ग, शोषण और क्रांति से उत्पन्न भय को आपस में जोड़ें।

7(ख). अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर
रोग-शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।
(ख) 'पंक' और 'जलज' का प्रतीकार्थ बताइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक में किसी दृश्य वस्तु के माध्यम से उससे जुड़े व्यापक सामाजिक या भावात्मक अर्थ व्यक्त किए जाते हैं। पंक का सामान्य अर्थ कीचड़ और जलज का अर्थ कमल है।
- पद्यांश में अट्टालिकाओं के विपरीत पंक तथा उसमें खिला छोटा कमल साधारण जनजीवन की दशा और जीवट को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: पंक का प्रतीकार्थ बताएँ पंक उस उपेक्षित, दलित और शोषित गरीब वर्ग का प्रतीक है जिसे समाज में निम्न स्थिति में रखा गया है। किसान और श्रमिक इसी वर्ग में आते हैं। जिस प्रकार कीचड़ को तुच्छ समझा जाता है, उसी प्रकार इन श्रमजीवी लोगों को संपन्न वर्ग उपेक्षा की दृष्टि से देखता है, जबकि परिवर्तन की ऊर्जा उन्हीं के जीवन में उत्पन्न होती है।

चरण 2: जलज का प्रतीकार्थ स्पष्ट करें क्षुद्र प्रफुल्ल जलज अभावों के बीच भी हँसते-खिलते कोमल बच्चों और उनकी सहज प्रसन्नता का प्रतीक है। अगली पंक्तियों का रोग-शोक में हँसता शिशु इस अर्थ को स्पष्ट करता है। कीचड़ में खिलकर कमल जैसे अपना सौंदर्य बनाए रखता है, वैसे ही गरीब परिवारों के बच्चे कठिन परिस्थितियों में भी जीवन का उल्लास बनाए रखते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पंक शोषित, उपेक्षित गरीब जनसमुदाय का और जलज उसी अभावग्रस्त जीवन में भी हँसते-खिलते बच्चों की कोमलता तथा प्रसन्नता का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: प्रतीकार्थ लिखते समय कीचड़ और कमल पर न रुकें; पंक को उपेक्षित जन से तथा जलज को अगली पंक्ति के हँसते शिशु से जोड़ें।

7(ग). अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर
रोग-शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।
(ग) आशय स्पष्ट कीजिए – सदा पंक पर ही होता जल-विप्लव-प्लावन। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक कीचड़ के साथ उपेक्षित गरीब जनता का प्रतीक है। जल-विप्लव-प्लावन जल की उथल-पुथल और बाढ़ के माध्यम से क्रांतिकारी परिवर्तन का संकेत देता है।

- पंक्ति का आशय समझने के लिए प्राकृतिक दृश्य तथा उससे व्यक्त सामाजिक अर्थ, दोनों को जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: प्राकृतिक बिंब का अर्थ समझें वर्षा का जल धरती के निचले, कीचड़युक्त हिस्सों में बहकर जमा होता है और वहाँ उथल-पुथल पैदा करता है। जल और पंक के इस संबंध से कवि दिखाता है कि परिवर्तन का प्रभाव धरातल पर अनुभव होता है। ऊँची अट्टालिकाओं की तुलना में पंक साधारण तथा नीचे रखे गए जीवन की स्थिति सामने लाता है।

चरण 2: क्रांति और गरीब जनता का संबंध स्पष्ट करें पंक के प्रतीकार्थ के अनुसार सामाजिक क्रांति का आधार शोषित और वंचित जनसमुदाय है। अन्याय का दुःख झेलने वाले लोग परिवर्तन की आवश्यकता सबसे अधिक अनुभव करते हैं और उसी से उनका जीवन बदल सकता है। इसलिए क्रांति की चेतना उन्हीं में विकसित होती है; वे नई व्यवस्था के स्वागत और निर्माण की शक्ति बनते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि क्रांति और परिवर्तन की धारा का मुख्य आधार शोषित गरीब जनता होती है। उन्हीं के जीवन में परिवर्तन की आकांक्षा जागती है और नई चेतना फैलती है।

त्वरित सुझाव: पहले पंक और जल-विप्लव का बिंब खोलें, फिर बताएँ कि सामाजिक अर्थ में पीड़ित जनता परिवर्तन का आधार क्यों बनती है।

7(घ). अट्टालिका नहीं है रे
आतंक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर
रोग-शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।
(घ) शिशु का उल्लेख यहाँ क्यों किया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में रोग-शोक के बीच भी हँसता शिशु जीवन की सहज प्रसन्नता, कोमलता और जिजीविषा का उदाहरण है।
- कीचड़ में खिलता छोटा कमल और दुःख में हँसता बच्चा, दोनों प्रतिकूल परिस्थितियों में बने रहने वाले जीवन-सौंदर्य को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: शिशु के उल्लेख का तत्काल संदर्भ समझें कवि पहले कीचड़ में खिले छोटे कमल का चित्र प्रस्तुत करता है। उसके बाद रोग और शोक में भी हँसते शिशु का उल्लेख करता है। शिशु का कोमल शरीर कठिनाइयाँ सहता है, फिर भी उसकी सहज हँसी पूरी तरह समाप्त नहीं होती। यह उदाहरण कमल के प्रफुल्ल रहने के भाव को मानवीय अनुभव के द्वारा स्पष्ट करता है।

चरण 2: सामाजिक संदेश से उसका संबंध जोड़ें गरीबों का जीवन अभाव और दुःख से घिरा हो सकता है, पर उसमें प्रेम, आशा और उल्लास भी मौजूद हैं। शिशु की हँसी इसी जीवट और निर्मल प्रसन्नता को मूर्त करती है। संपन्न लोगों के भय से भरी अट्टालिकाओं के सामने यह जीवन-दृष्टि विशेष महत्त्व रखती है: वास्तविक आनंद केवल धन तथा बाहरी सुरक्षा पर निर्भर नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष शिशु का उल्लेख यह दिखाने के लिए किया गया है कि रोग, शोक और अभाव के बीच भी जीवन अपनी सहज हँसी तथा आशा बनाए रखता है। वह गरीब जनजीवन की जिजीविषा को साकार करता है।

त्वरित सुझाव: शिशु की केवल मासूमियत न लिखें; रोग-शोक और हँसता है के विरोध से कठिनाइयों में भी बने रहने वाले उल्लास का अर्थ निकालें।

8(क). नीचे लिखे काव्य खण्ड को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।

अस विचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।

(क) काव्यांश में प्रयुक्त भाषा एवं छन्द का नाम लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की पहचान काव्यांश के शब्दों और क्रियारूपों से की जाती है। तुलसीदास के रामचरितमानस की भाषा अवधी है।
- चौपाई सममात्रिक छंद है। इसके चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ रहती हैं।

चरण 1: काव्यांश की भाषा पहचानें काव्यांश की भाषा अवधी है। इसमें प्रयुक्त होहिं, जाहिं, जियँ, मिलइ और ताता जैसे रूप अवधी की पहचान कराते हैं। रामचरितमानस के इस प्रसंग में राम मूर्च्छित लक्ष्मण को संबोधित करते हैं। सुत, बित, नारि तथा सहोदर जैसे शब्द लोकभाषा की सहजता के साथ साहित्यिक गरिमा भी बनाए रखते हैं।

चरण 2: छंद का नाम और स्वरूप बताएँ इन पंक्तियों का छंद चौपाई है। सुत बित नारि भवन परिवारा और होहिं जाहिं जग बारहिं बारा उसके क्रमिक चरण हैं; इसी तरह अगली पंक्ति में दो और चरण आते हैं। चौपाई में प्रत्येक चरण 16 मात्राओं का होता है। इसलिए मुद्रित रूप में दो पंक्तियाँ दिखने पर भी इसे दोहा नहीं कहना चाहिए; छंद की पहचान उसके चरणों और मात्रा-विन्यास से होती है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत काव्यांश की भाषा अवधी और छंद चौपाई है। चौपाई के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं।

त्वरित सुझाव: होहिं, जाहिं और मिलइ जैसे रूपों से अवधी पहचानें; केवल दो मुद्रित पंक्तियाँ देखकर दोहा न लिखें, चौपाई के चार चरण ध्यान में रखें।

8(ख). नीचे लिखे काव्य खण्ड को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।

अस विचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।

(ख) प्रयुक्त अलंकार का नाम और दो उदाहरण लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुप्रास अलंकार में एक ही व्यंजन की आवृत्ति से काव्य में ध्वनि-सौंदर्य उत्पन्न होता है। पहचान करते समय शब्दों का अर्थ नहीं, उनमें आने वाली समान व्यंजन-ध्वनि देखी जाती है।
- दिए गए अंश में समान ध्वनियों की पुनरावृत्ति भाषा को लयात्मक बनाती है और राम की भावपूर्ण वाणी को श्रुतिमधुर बनाती है।

चरण 1: पहला उदाहरण पहचानिए 'बारहिं बारा' में 'ब' व्यंजन की आवृत्ति है। दोनों शब्दों के आरंभ में समान ध्वनि सुनाई पड़ती है, इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है। इस पदबंध का अर्थ बार-बार है; इसकी आवृत्त ध्वनि संसार में संबंधों और वस्तुओं के बार-बार मिलने तथा बिछुड़ने के कथन को लय देती है।

चरण 2: दूसरा उदाहरण पहचानिए 'जियँ जागहु' में 'ज' व्यंजन की आवृत्ति है। दोनों अलग शब्द समान व्यंजन से आरंभ होते हैं। यहाँ भी ध्वनि की पुनरावृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है। यह प्रयोग लक्ष्मण को हृदय से पुकारते हुए जागने का अनुरोध करने वाली राम की वाणी में कोमलता और संगीतात्मकता लाता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रयुक्त अलंकार अनुप्रास है। इसके दो उदाहरण हैं: 'बारहिं बारा' में 'ब' की आवृत्ति और 'जियँ जागहु' में 'ज' की आवृत्ति।

त्वरित सुझाव: अनुप्रास का उदाहरण लिखते समय पूरा पदबंध उद्धृत कीजिए और साथ में बार-बार आने वाला व्यंजन भी बताइए।

8(ग). नीचे लिखे काव्य खण्ड को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।

अस विचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।

(ग) कविता का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य स्पष्ट करते समय काव्यांश की मूल संवेदना, संबंधों के महत्त्व और पाठक पर पड़ने वाले प्रभाव को समझाया जाता है।
- इस अंश में राम की लक्ष्मण के प्रति आत्मीयता और सहोदर भाई की अपूरणीयता का भाव प्रमुख है।

चरण 1: सहोदर संबंध का महत्त्व समझाइए राम कहते हैं कि पुत्र, धन, पत्नी, घर और परिवार संसार में बार-बार मिलते और बिछुड़ते रहते हैं, किंतु सहोदर भाई फिर नहीं मिलता। यह कथन किसी अन्य संबंध को निरर्थक बताने के लिए नहीं, बल्कि लक्ष्मण के प्रति उनके असाधारण स्नेह को व्यक्त करने के लिए है। भाई की संभावित वियोग-पीड़ा में वे इस संबंध को सबसे अमूल्य अनुभव करते हैं।

चरण 2: करुणा और आत्मीयता स्पष्ट कीजिए 'जागहु ताता' कहकर राम लक्ष्मण को अत्यंत स्नेह से जागने के लिए पुकारते हैं। 'ताता' संबोधन में अपनापन तथा जागने की प्रार्थना में उनकी व्याकुलता प्रकट होती है। राम का यह मानवीय रूप पाठक को द्रवित करता है। सहज शब्दों में व्यक्त भाई के बिछुड़ने का भय काव्यांश को मार्मिक बनाता है और करुण रस की अनुभूति कराता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस काव्यांश का भाव-सौंदर्य राम के अनन्य भ्रातृप्रेम, लक्ष्मण के वियोग की आशंका से उत्पन्न व्याकुलता और सहोदर भाई को अपूरणीय मानने की मार्मिक अभिव्यक्ति में है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य के उत्तर में 'मिलइ न जगत सहोदर भ्राता' से भाई का महत्त्व और 'जागहु ताता' से राम की करुण पुकार जोड़िए।

अथवा

8(क). जो मुझको बदनाम करे हैं काश वे इतना सोच सकें।

मेरा परदा खोले हैं या अपना परदा खोले हैं।।

(क) कविता का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में भाव-सौंदर्य का आधार निंदा करने वालों के आचरण पर किया गया सूक्ष्म व्यंग्य है।
- कवि दूसरे की बदनामी और निंदक के अपने चरित्र के अनावरण के बीच संबंध दिखाता है।

चरण 1: कवि की कामना समझाइए कवि चाहता है कि उसे बदनाम करने वाले लोग कुछ सोचें। 'काश' शब्द में यह इच्छा व्यक्त हुई है कि वे अपने कार्य का परिणाम समझ सकें। वे दूसरों के सामने कवि की बुराइयाँ खोलने का दावा करते हैं, पर उन्हें यह विचार नहीं आता कि निराधार निंदा अथवा दुर्भावना से किया गया दोष-प्रचार उनके अपने मन की स्थिति भी दिखाता है।

चरण 2: व्यंग्य और नैतिक संकेत स्पष्ट कीजिए कवि पूछता है कि निंदक उसका परदा खोल रहे हैं या अपना। दूसरे को अपमानित करने की चेष्टा में उनकी ईर्ष्या, दुर्भावना और संकीर्णता प्रकट हो जाती है। यह प्रश्न निंदकों को आत्मचिंतन का अवसर देता है। कवि क्रोधपूर्ण प्रतिशोध की भाषा अपनाने के स्थान पर संयमित व्यंग्य से उनके आचरण की विडंबना सामने लाता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाव-सौंदर्य इस सत्य की व्यंजना में है कि दूसरों को बदनाम करने वाला अपनी दुर्भावना और ओछेपन को भी प्रकट कर देता है। आत्मचिंतन की कामना और संयत व्यंग्य इस कथन को प्रभावशाली बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: 'काश' से कवि की कामना और 'अपना परदा' से निंदक का स्वयं बेनकाब होना समझाइए; इन्हीं से भाव-सौंदर्य खुलता है।

8(ख). जो मुझको बदनाम करे हैं काश वे इतना सोच सकें।
मेरा परदा खोले हैं या अपना परदा खोले हैं।।
(ख) काव्यांश की भाषा की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-भाषा की विशेषताएँ बताते समय शब्दावली, वाक्य-प्रयोग, मुहावरे और उनके प्रभाव का उल्लेख किया जाता है।
- दिए गए शेर की भाषा सहज बोलचाल की हिंदुस्तानी है, जिसमें हिंदी और उर्दू की प्रचलित शब्दावली घुली-मिली है।

चरण 1: शब्दावली और बोलचाल का रूप बताइए 'बदनाम', 'काश' और 'परदा' जैसे उर्दू में प्रचलित शब्द 'जो', 'मुझको', 'इतना' तथा 'अपना' जैसे सहज हिंदी शब्दों के साथ आए हैं। इससे भाषा परिचित और सुबोध बन गई है। 'करे हैं' और 'खोले हैं' जैसी क्रियाएँ बोलचाल का विशिष्ट अंदाज़ पैदा करती हैं। कवि थोड़े-से सामान्य शब्दों से एक गंभीर मानवीय अनुभव व्यक्त करता है।

चरण 2: मुहावरे और शैली का प्रभाव समझाइए 'परदा खोलना' मुहावरे का प्रयोग किसी की छिपी वास्तविकता प्रकट करने के अर्थ में हुआ है। 'मेरा' और 'अपना' के आमने-सामने आने से व्यंग्य तीखा बनता है। प्रश्नात्मक शैली निंदक को अपने आचरण पर सोचने को बाध्य करती है। 'परदा खोले हैं' की पुनरावृत्ति कथन में लय और प्रभाव जोड़ती है तथा छोटे शेर को अर्थगर्भित बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा सरल, बोलचाल की, हिंदी-उर्दू मिश्रित, मुहावरेदार और अर्थगर्भित है। उसकी प्रश्नात्मक तथा व्यंग्यात्मक शैली कथन को मार्मिक और प्रभावपूर्ण बनाती है।

त्वरित सुझाव: भाषा की हर विशेषता के साथ इसी शेर से एक शब्द या प्रयोग दीजिए; केवल सरल और सुंदर कहने से उत्तर पूरा नहीं होगा।

8(ग). जो मुझको बदनाम करे हैं काश वे इतना सोच सकें।
मेरा परदा खोले हैं या अपना परदा खोले हैं।।
(ग) 'परदा खोलना' का प्रयोग-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरा अपने शाब्दिक अर्थ से अलग एक प्रचलित अर्थ देता है और कम शब्दों में कथन को अधिक प्रभावशाली बनाता है।
- इस शेर में 'परदा खोलना' किसी की छिपी बातों अथवा वास्तविक चरित्र को उजागर करने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

चरण 1: मुहावरे का आशय स्पष्ट कीजिए यहाँ परदे से आशय कपड़े के वास्तविक परदे से नहीं है। कवि की छिपी कमजोरियाँ प्रकट करने का दावा करने वाले निंदक उसकी प्रतिष्ठा गिराना चाहते हैं। 'मेरा परदा खोले हैं' उनके इसी प्रयास को सहज और चित्रात्मक ढंग से व्यक्त करता है। इस मुहावरे के कारण वास्तविकता को छिपाने और फिर उसे सामने लाने का भाव तुरंत समझ में आता है।

चरण 2: अर्थ के उलटाव का सौंदर्य समझाइए 'अपना परदा खोले हैं' कहकर कवि उसी मुहावरे का लक्ष्य निंदकों की ओर मोड़ देता है। दूसरों की बदनामी करते समय उनकी अपनी दुर्भावना और संकीर्ण मानसिकता सामने आती है। 'मेरा' से 'अपना' की ओर यह बदलाव तीखा व्यंग्य पैदा करता है। प्रश्न के रूप में किया गया प्रयोग पाठक को दोनों अर्थों का संबंध समझने और निंदक के आचरण पर विचार करने का अवसर देता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'परदा खोलना' मुहावरा छिपे चरित्र को उजागर करने का अर्थ देता है। उसी प्रयोग को निंदित व्यक्ति से निंदक की ओर मोड़कर कवि ने कम शब्दों में प्रभावशाली व्यंग्य और अर्थ की गहराई पैदा की है।

त्वरित सुझाव: प्रयोग-सौंदर्य बताते समय पहले 'परदा खोलना' का अर्थ लिखिए, फिर समझाइए कि 'मेरा' से 'अपना' होने पर व्यंग्य कैसे बनता है।

9(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (क) कागज के पन्ने की तुलना छोटे चौकोने खेत से करने का आधार स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'छोटा मेरा खेत' में कवि ने कविता रचने की प्रक्रिया को खेती के रूपक के द्वारा समझाया है। कागज का पन्ना कविता के जन्म और विकास का आधार बनता है।
- इस तुलना का आधार पन्ने और खेत का आकार ही नहीं, बल्कि दोनों में बीज से फसल तक होने वाली सृजन-प्रक्रिया की समानता भी है।

चरण 1: आकार और आधार की समानता समझाइए कागज का पन्ना छोटे चौकोने खेत जैसा दिखाई देता है। खेत किसान के श्रम और उत्पादन का क्षेत्र है; उसी प्रकार कागज कवि की रचनात्मक साधना का क्षेत्र है। किसान भूमि में बीज बोता है, जबकि कवि अपने मन में उपजे भाव या विचार को पन्ने पर अभिव्यक्ति देता है। इसलिए पन्ना केवल लिखने की वस्तु नहीं, काव्य-सृजन की भूमि बन जाता है।

चरण 2: बीज से फसल तक की प्रक्रिया जोड़िए कविता में किसी भावनात्मक आवेग से आया भाव-विचार बीज का कार्य करता है। कल्पना के सहारे वह विकसित होता है और शब्दों के रूप में अंकुरित होकर रचना का रूप लेता है। खेती में पौधा पल्लवित होकर फल देता है; कविता में भाव, कल्पना और शब्दों के विकास से ऐसी कृति बनती है जो पाठक को आनंद देती है। इस प्रकार कृषि की प्रक्रिया काव्य के जन्म और परिपक्व होने को मूर्त रूप देती है।

चरण 3: काव्य की फसल की विशेषता बताइए साधारण खेत की फसल कटाई के बाद समाप्त हो जाती है और फिर नई बुवाई करनी पड़ती है। कविता की रसपूर्ण फसल बार-बार पढ़ने और बाँटने पर भी समाप्त नहीं होती। अलग-अलग समय के पाठक उससे आनंद तथा संवेदना प्राप्त करते रहते हैं। छोटा-सा कागज इसलिए असीम काव्य-रस उत्पन्न करने वाला खेत बन जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष कागज और खेत की तुलना का आधार उनका चौकोना आकार तथा दोनों की सृजनशीलता है। भाव का बीज, कल्पना का पोषण और शब्दों का विकास कागज पर कविता की ऐसी फसल तैयार करते हैं जिसका रस बार-बार ग्रहण किया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल चौकोना आकार न लिखिए; खेत-बीज-फसल को क्रमशः कागज-भाव-कविता से जोड़कर तुलना का पूरा आधार बताइए।

9(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (ख) सिद्ध कीजिए कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील चित्रण है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता में उषाकाल का सौंदर्य बदलते रंगों और दृश्य बिंबों से व्यक्त हुआ है। गतिशील चित्रण में दृश्य समय के साथ रूप बदलता है।
- राख से लीपा चौका, सिल और खड़िया जैसे घरेलू उपमान ग्रामीण परिवेश की पहचान कराते हैं।

चरण 1: ग्रामीण जीवन से जुड़े बिंब पहचानिए कवि भोर के नीले आकाश को शंख और राख से लीपे, अभी गीले पड़े चौके के समान देखता है। चौका लीपने की क्रिया गाँव के घरों की सुबह याद दिलाती है। आकाश की लालिमा के लिए बहुत काली सिल पर थोड़ा लाल केसर घिसे होने का बिंब आया है। स्लेट पर लाल खड़िया मलने का बिंब भी सामान्य जीवन की परिचित वस्तुओं से सुबह के रंग जोड़ता है। इस प्रकार प्रकृति का चित्र आसपास के घरेलू और ग्रामीण अनुभवों के सहारे सजीव बनता है।

चरण 2: रंगों और प्रकाश के क्रमिक परिवर्तन समझिए कविता एक स्थिर दृश्य पर नहीं ठहरती। पहले नीला और अँधेरा आकाश दिखाई देता है; फिर उसमें लालिमा फैलती है। आगे नीले जल में किसी गौर देह के झिलमिलाने का बिंब प्रातःकालीन प्रकाश की चमक और कंपन का अनुभव कराता है। अंत में सूर्योदय होने लगता है और उषा का मोहक जादू टूटता है। अँधेरे से उजाले तथा नीले से लाल और उज्ज्वल रंगों की यात्रा सुबह के निरंतर बदलते स्वरूप को व्यक्त करती है।

चरण 3: निष्कर्ष ग्रामीण घरेलू उपमानों तथा उषाकाल से सूर्योदय तक बदलते रंग, चमक और प्रकाश के कारण 'उषा' गाँव की सुबह का सजीव एवं गतिशील चित्र प्रस्तुत करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में गाँव का आधार बताने के लिए चौका और सिल के बिंब लिखिए तथा गतिशीलता सिद्ध करने के लिए सूर्योदय तक रंगों का बदलना दिखाइए।

9(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (ग) कैमरे में बन्द अपाहिज कविता कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती है, कैसे? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता संचार माध्यमों में दुख को प्रदर्शन की वस्तु बना देने वाली मानसिकता पर व्यंग्य करती है।
- संवेदना का अर्थ दुखी मनुष्य की गरिमा और भावनाओं का सम्मान है; उसके आँसू से कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाना संवेदनहीनता है।

चरण 1: साक्षात्कारकर्ता का व्यवहार देखिए कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति की रुचि अपाहिज मनुष्य की सहायता या उसके अनुभव समझने में नहीं है। वह ऐसे प्रश्न पूछता है जिनसे उस व्यक्ति को अपनी शारीरिक असमर्थता और दुख का बार-बार बोध हो। सामने बैठे मनुष्य की झिझक और असुविधा के बावजूद उससे दुख व्यक्त करवाने का दबाव बनाया जाता है। यह व्यवहार उसे स्वतंत्र भावनाओं वाला व्यक्ति मानने के स्थान पर कार्यक्रम की सामग्री बना देता है।

चरण 2: आँसुओं को तमाशा बनाने की प्रवृत्ति समझिए संचालक कैमरे पर उसकी पीड़ा और आँसुओं को उभारकर दर्शकों में करुणा का प्रभाव पैदा करना चाहता है। कैमरे से चेहरे और आँखों के भावों को बड़ा करके दिखाने की योजना भी इसी उद्देश्य से जुड़ी है। कार्यक्रम के लिए तय समय में व्यक्ति को रुला पाना और दर्शकों को भावुक कर देना प्रमुख हो जाता है। सामाजिक उद्देश्य का दावा करने पर भी उसकी वास्तविक समस्या पीछे छूट जाती है। दुख के प्रति यह व्यावसायिक और प्रदर्शनप्रिय दृष्टि मानवीय संवेदना का अभाव दिखाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता उन कार्यक्रम निर्माताओं और संचालकों की संवेदनहीनता उजागर करती है जो अपाहिज की गरिमा और सहायता की उपेक्षा करके उसकी पीड़ा को दर्शकों के मनोरंजन और भावुकता का साधन बना देते हैं।

त्वरित सुझाव: संवेदनहीनता बताते समय दुख पूछने और दुख का प्रदर्शन करवाने में अंतर स्पष्ट कीजिए; दबावपूर्ण प्रश्न तथा आँसुओं का चित्रण इसके प्रमाण हैं।

10(क). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमन्त्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त जेब भरी हो तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है। थोड़ी देर को स्वाभिमान को ज़रूर सेंक मिल जाता है। पर इससे अभिमान की गिल्टी को और खुराक ही मिलती है। जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ होगी?

(क) बाज़ार के जादू से क्या तात्पर्य है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में 'जादू' शब्द वास्तविक चमत्कार के लिए नहीं, बाज़ार के आकर्षण के रूपक के रूप में आया है।
- आँख से दिखाई देने वाली सुंदर वस्तुओं का रूप मन की इच्छाओं और खरीदने के निर्णय को प्रभावित करता है।

चरण 1: जादू का स्वरूप पहचानिए लेखक स्पष्ट करता है कि बाज़ार का जादू आँख की राह काम करने वाला रूप का जादू है। सजी हुई आकर्षक वस्तुएँ देखकर मनुष्य उनकी ओर खिंचता है। उनका बाहरी सौंदर्य इतना प्रभाव डालता है कि वह वस्तुओं की वास्तविक उपयोगिता का विचार पीछे छोड़ देता है।

चरण 2: खरीदने की इच्छा पर प्रभाव समझिए इस आकर्षण में मनुष्य को बाज़ार का हर सामान ज़रूरी तथा आराम बढ़ाने वाला लगता है। उसके मन में 'यह भी लूँ, वह भी लूँ' की इच्छा उठती है। आवश्यकता न होने पर भी वस्तुएँ खरीदने की यह ललक ही बाज़ार के जादू का प्रभाव है। यहाँ जादू का संबंध वस्तुओं के रूप और मनुष्य की इच्छाओं से है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू वस्तुओं की आकर्षक सजावट और रूप का वह प्रभाव है जो आँखों के रास्ते मन को बाँधकर अनावश्यक सामान भी खरीदने की इच्छा जगाता है।

त्वरित सुझाव: 'आँख की राह', 'रूप का जादू' और 'यह भी लूँ, वह भी लूँ' को जोड़कर उत्तर लिखिए; इन्हीं से अर्थ और प्रभाव दोनों स्पष्ट होते हैं।

10(ख). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमन्त्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त जेब भरी हो तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है। थोड़ी देर को स्वाभिमान को ज़रूर सेंक मिल जाता है। पर इससे अभिमान की गिल्टी को और खुराक ही मिलती है। जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ होगी?

(ख) बाज़ार का जादू कब अधिक प्रभावी होता है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश बाज़ार के आकर्षण का प्रभाव मनुष्य की मानसिक स्थिति और उसकी खरीदने की क्षमता से जोड़ता है।
- 'मन खाली' होने का आशय अपनी आवश्यकताओं के विषय में स्पष्टता और संतोष का अभाव है; 'जेब भरी' धन की उपलब्धता बताती है।

चरण 1: अधिक प्रभाव की स्थिति बताइए बाज़ार का जादू तब अधिक प्रभावी होता है जब जेब भरी हो और मन खाली हो। खाली

मन बाज़ार की अनेक वस्तुओं का निमंत्रण स्वीकार करता है। उसे यह स्पष्ट नहीं होता कि उसे वास्तव में किस वस्तु की आवश्यकता है, इसलिए अनेक सामान उसे उपयोगी और आरामदायक दिखाई देने लगते हैं।

चरण 2: मन और धन की भूमिका समझिए मन में जरूरत का निश्चय न होने से आकर्षक वस्तुएँ नई इच्छाएँ जगाती हैं। साथ ही पर्याप्त पैसे होने पर उन इच्छाओं को तुरंत पूरा करना संभव लगता है। इसलिए व्यक्ति एक के बाद दूसरी वस्तु लेने को उत्सुक होता है। गद्यांश के अनुसार खाली जेब पर भी आकर्षण हो सकता है, पर भरी जेब और खाली मन साथ हों तो उसका प्रभाव विशेष रूप से बढ़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष जेब भरी और मन खाली होने पर बाज़ार का जादू सबसे अधिक चलता है, क्योंकि आवश्यकता का विवेक कमजोर पड़ता है और उपलब्ध धन मनचाही खरीदारी का अवसर देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को 'कब' और 'क्यों' में बाँटिए: पहले भरी जेब व खाली मन लिखिए, फिर इच्छा पैदा होने और खरीद सकने का संबंध समझाइए।

10(ग). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमन्त्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त जेब भरी हो तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है। थोड़ी देर को स्वाभिमान को ज़रूर सेंक मिल जाता है। पर इससे अभिमान की गिल्टी को और खुराक ही मिलती है। जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ होगी?

(ग) जादू का प्रभाव समाप्त होने पर क्या अनुभव होता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आकर्षण के समय वस्तुओं का रूप उनकी वास्तविक उपयोगिता से अधिक प्रभावी लगता है। प्रभाव समाप्त होने पर उपयोगिता का मूल्यांकन संभव होता है।
- गद्यांश आवश्यकता से अधिक फैंसी सामान को आराम का साधन मानने की भूल और उससे बढ़ते अहंकार की चर्चा करता है।

चरण 1: भ्रम दूर होने का अनुभव बताइए बाज़ार के जादू का प्रभाव समाप्त होने पर व्यक्ति को पता चलता है कि अनेक फैंसी वस्तुएँ खरीद लेने से उसका आराम नहीं बढ़ा है। जो सामान आकर्षण के समय जरूरी लग रहा था, वह वास्तविक जीवन में उतना उपयोगी नहीं है। उसकी बहुतायत सुविधा देने के बजाय आराम में बाधा डालती है।

चरण 2: संतोष और अहंकार का अंतर समझिए इन वस्तुओं को प्राप्त करके व्यक्ति को थोड़ी देर अपनी हैसियत पर प्रसन्नता हो सकती है। लेखक कहता है कि इससे स्वाभिमान को क्षणिक सेंक मिलता है, पर वास्तव में अभिमान को और खुराक मिलती है। वस्तुओं का सुख स्थायी तृप्ति नहीं देता; उलटे उनके प्रति आसक्ति और दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ सकती है। यही आकर्षण उतरने पर सामने आने वाली वास्तविकता है।

चरण 3: निष्कर्ष जादू उतरने पर अनुभव होता है कि फैंसी सामान की अधिकता आराम बढ़ाने के बजाय उसमें खलल डालती है; उससे मिलने वाली क्षणिक तुष्टि अहंकार को ही बढ़ाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर का मुख्य बिंदु 'आराम में मदद नहीं, खलल' रखिए और उसके बाद क्षणिक तुष्टि तथा बढ़ते अभिमान का उल्लेख कीजिए।

10(घ). नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमन्त्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त जेब भरी हो तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है। थोड़ी देर को स्वाभिमान को ज़रूर सेंक मिल जाता है। पर इससे अभिमान की गिल्टी को और खुराक ही मिलती है। जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ होगी?

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए 'अभिमान की गिल्टी को और खुराक मिलती है।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'गिल्टी' गाँठ के लिए प्रयुक्त शब्द है; यहाँ यह मन के भीतर जमे अभिमान का रूपक है।
- 'खुराक' मिलने का अर्थ किसी प्रवृत्ति का पोषण होना है। लेखक आकर्षक सामान से मिलने वाली झूठी श्रेष्ठता पर टिप्पणी करता है।

चरण 1: रूपक के शब्दों का अर्थ खोलिए अभिमान की गिल्टी से आशय मनुष्य के मन में बनी अहंकार की गाँठ है। वस्तुओं के स्वामित्व के कारण स्वयं को अधिक बड़ा या दूसरों से श्रेष्ठ समझना इसी अभिमान का रूप है। उसे खुराक मिलना अर्थात उसका कमजोर होने के स्थान पर और पुष्ट होते जाना है।

चरण 2: प्रसंग से आशय स्पष्ट कीजिए बाज़ार से बहुत-सा फैंसी सामान खरीदकर व्यक्ति को अपनी सम्पन्नता दिखाने का अवसर मिलता है। उसे कुछ समय लगता है कि उसकी प्रतिष्ठा बढ़ गई है। वस्तुओं से मिला यह क्षणिक संतोष वास्तविक आत्मसम्मान नहीं बढ़ाता, बल्कि अधिक संग्रह और प्रदर्शन की इच्छा को बल देता है। इसीलिए लेखक कहता है कि ऐसी खरीदारी अभिमान की गाँठ का पोषण करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि अनावश्यक आकर्षक वस्तुओं का संग्रह मनुष्य में सम्पन्नता और श्रेष्ठता का घमंड बढ़ाता है; उससे वास्तविक संतोष के बजाय अहंकार को बल मिलता है।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय 'गिल्टी = अहंकार की गाँठ' और 'खुराक = उसका पोषण' स्पष्ट कर इन्हें फैंसी सामान खरीदने के प्रसंग से जोड़िए।

अथवा

10(क). दोनों ही लड़के राज-दरबार के भावी पहलवान घोषित हो चुके थे। अतः दोनों का भरण-पोषण दरबार से ही हो रहा था। प्रतिदिन प्रातःकाल पहलवान स्वयं ढोलक बजाकर दोनों से कसरत करवाता। दोपहर में, लेटे-लेटे दोनों को सांसारिक ज्ञान की भी शिक्षा देता – 'समझे! ढोलक की आवाज पर पूरा ध्यान देना। हाँ, मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है, समझे! ढोल की आवाज के प्रताप से ही मैं पहलवान हुआ। दंगल में उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करना, समझे!' ऐसी ही बहुत सी बातें वह कहा करता। फिर मालिक को कैसे खुश रखा जाता है, कब कैसा व्यवहार करना चाहिए, आदि की शिक्षा वह नित्य दिया करता था।

(क) पहलवान के बेटों का भरण-पोषण राज-दरबार से क्यों होता था? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में कारण और परिणाम का संबंध पहचानना आवश्यक है। यहाँ 'अतः' शब्द लड़कों की नियुक्त स्थिति को उनके भरण-पोषण से जोड़ता है।
- राजदरबार का संरक्षण भविष्य के पहलवानों के प्रशिक्षण और पालन-पोषण का आधार था।

चरण 1: लड़कों की दरबारी स्थिति पहचानिए गद्यांश की पहली पंक्ति बताती है कि पहलवान के दोनों लड़के राजदरबार के भावी पहलवान

घोषित किए जा चुके थे। इसलिए वे केवल लुट्टन के पुत्र होने के कारण नहीं, बल्कि भविष्य में दरबार के पहलवान बनने के कारण संरक्षण पा रहे थे।

चरण 2: भरण-पोषण का कारण स्पष्ट कीजिए भावी पहलवान घोषित होने के फलस्वरूप दोनों लड़कों के पालन-पोषण का दायित्व राजदरबार ने लिया था। उनके भोजन और अन्य आवश्यकताओं की व्यवस्था दरबार करता था तथा लुट्टन उन्हें प्रतिदिन अभ्यास करवाता था। इस प्रकार राजकीय संरक्षण में उनकी तैयारी चल रही थी।

चरण 3: निष्कर्ष पहलवान के दोनों पुत्र राजदरबार के भावी पहलवान घोषित हो चुके थे; इसी कारण उनका भरण-पोषण राजदरबार से होता था।

त्वरित सुझाव: पहले वाक्य में उनकी घोषित भूमिका पहचानिए और 'अतः' के बाद दिए परिणाम से उसे जोड़कर कारण लिखिए।

10(ख). दोनों ही लड़के राज-दरबार के भावी पहलवान घोषित हो चुके थे। अतः दोनों का भरण-पोषण दरबार से ही हो रहा था। प्रतिदिन प्रातःकाल पहलवान स्वयं ढोलक बजाकर दोनों से कसरत करवाता। दोपहर में, लेटे-लेटे दोनों को सांसारिक ज्ञान की भी शिक्षा देता – 'समझे! ढोलक की आवाज पर पूरा ध्यान देना। हाँ, मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है, समझे! ढोल की आवाज के प्रताप से ही मैं पहलवान हुआ। दंगल में उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करना, समझे!' ऐसी ही बहुत सी बातें वह कहा करता। फिर मालिक को कैसे खुश रखा जाता है, कब कैसा व्यवहार करना चाहिए, आदि की शिक्षा वह नित्य दिया करता था।

(ख) पहलवान अपने पुत्रों को क्या शिक्षा दिया करता था? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लुट्टन की शिक्षा में पहलवानी का अभ्यास और सांसारिक व्यवहार, दोनों सम्मिलित थे।
- ढोल की ध्वनि पर ध्यान देना तथा उसे गुरु के समान आदर देना उसकी पहलवानी की शिक्षा का प्रमुख आधार था।

चरण 1: पहलवानी संबंधी शिक्षा बताइए लुट्टन सुबह स्वयं ढोलक बजाकर पुत्रों से कसरत करवाता था। वह उन्हें ढोल की आवाज पर पूरा ध्यान देने और दंगल में उतरने से पहले ढोलों को प्रणाम करने की शिक्षा देता था। अपने अनुभव के आधार पर वह समझाता था कि ढोल ही उसका गुरु है और उसी की आवाज के प्रभाव से वह पहलवान बना है।

चरण 2: व्यवहार संबंधी शिक्षा बताइए दोपहर को वह पुत्रों को सांसारिक ज्ञान देता था। वह सिखाता था कि अपने मालिक को कैसे प्रसन्न रखा जाए और किस अवसर पर कैसा व्यवहार किया जाए। इस प्रकार वह उन्हें शारीरिक अभ्यास के साथ दरबारी जीवन में आवश्यक व्यवहारकुशलता की भी शिक्षा देता था।

चरण 3: निष्कर्ष पहलवान अपने पुत्रों को ढोल की आवाज पर ध्यान देने, दंगल से पहले ढोलों को प्रणाम करने और नियमित कसरत करने की शिक्षा देता था। साथ ही वह मालिक को प्रसन्न रखने तथा अवसर के अनुरूप व्यवहार करने का सांसारिक ज्ञान भी देता था।

त्वरित सुझाव: उत्तर में 'प्रातःकाल' से पहलवानी की शिक्षा और 'दोपहर' से सांसारिक व्यवहार की शिक्षा अलग पहचानिए।

10(ग). दोनों ही लड़के राज-दरबार के भावी पहलवान घोषित हो चुके थे। अतः दोनों का भरण-पोषण दरबार से ही हो रहा था। प्रतिदिन प्रातःकाल पहलवान स्वयं ढोलक बजाकर दोनों से कसरत करवाता। दोपहर में, लेटे-लेटे दोनों को सांसारिक ज्ञान की भी शिक्षा देता – 'समझे! ढोलक की आवाज पर पूरा ध्यान देना। हाँ, मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है, समझे! ढोल की आवाज के प्रताप से ही मैं पहलवान हुआ। दंगल में उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करना, समझे!' ऐसी ही बहुत सी बातें वह कहा करता। फिर मालिक को कैसे खुश रखा जाता है, कब कैसा व्यवहार करना चाहिए, आदि की शिक्षा वह नित्य दिया करता था।

(ग) लुट्टन किसे अपना गुरु मानता था और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गुरु वह है जिससे साधक को सीख और आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। लुट्टन के लिए यह भूमिका ढोल ने निभाई थी।
- गद्यांश में लुट्टन स्वयं अपनी पहलवानी का श्रेय ढोल की आवाज को देता है; कारण इसी कथन से स्पष्ट होता है।

चरण 1: लुट्टन के गुरु की पहचान कीजिए लुट्टन किसी व्यक्ति या पहलवान को अपना गुरु नहीं मानता था। वह ढोल को अपना गुरु मानता था। अपने पुत्रों से वह स्पष्ट कहता था कि उसका गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है। इससे ढोल के प्रति उसकी गहरी श्रद्धा प्रकट होती है।

चरण 2: ढोल को गुरु मानने का कारण समझाइए लुट्टन का विश्वास था कि ढोल की आवाज के प्रताप से ही वह पहलवान बना है। ढोल की ध्वनि उसके लिए अभ्यास और कुश्ती की प्रेरणा थी। इसी कारण वह स्वयं ढोलक बजाकर पुत्रों को अभ्यास करवाता था तथा उन्हें दंगल से पहले ढोलों को प्रणाम करने को कहता था। यह प्रणाम उसकी गुरु के प्रति कृतज्ञता का रूप था।

चरण 3: निष्कर्ष लुट्टन ढोल को अपना गुरु मानता था, क्योंकि उसके अनुसार ढोल की आवाज के प्रभाव और प्रेरणा से ही वह पहलवान बना था। इसलिए वह पुत्रों को भी ढोल के प्रति आदर रखने की शिक्षा देता था।

त्वरित सुझाव: 'किसे' के उत्तर में ढोल लिखिए और 'क्यों' के लिए लुट्टन का अपनी पहलवानी का श्रेय ढोल की आवाज को देना बताइए।

10(घ). दोनों ही लड़के राज-दरबार के भावी पहलवान घोषित हो चुके थे। अतः दोनों का भरण-पोषण दरबार से ही हो रहा था। प्रतिदिन प्रातःकाल पहलवान स्वयं ढोलक बजाकर दोनों से कसरत करवाता। दोपहर में, लेटे-लेटे दोनों को सांसारिक ज्ञान की भी शिक्षा देता – 'समझे! ढोलक की आवाज पर पूरा ध्यान देना। हाँ, मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है, समझे! ढोल की आवाज के प्रताप से ही मैं पहलवान हुआ। दंगल में उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करना, समझे!' ऐसी ही बहुत सी बातें वह कहा करता। फिर मालिक को कैसे खुश रखा जाता है, कब कैसा व्यवहार करना चाहिए, आदि की शिक्षा वह नित्य दिया करता था।

(घ) आज गाँवों में अखाड़े समाप्त हो रहे हैं, इसके क्या कारण हो सकते हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न वर्तमान ग्रामीण जीवन पर विचार माँगता है। इसलिए अखाड़ों की स्थिति के संभावित सामाजिक और आर्थिक कारण बताने हैं।
- किसी पारंपरिक खेल को बनाए रखने के लिए संरक्षण, अभ्यास का स्थान, प्रशिक्षक और युवाओं की निरंतर भागीदारी आवश्यक होती है।

चरण 1: संरक्षण और संसाधनों की कमी समझाइए गाँवों में अखाड़ों के समाप्त होने का एक कारण आर्थिक संरक्षण और उचित सुविधाओं की कमी हो सकता है। अभ्यास के लिए खुला स्थान, प्रशिक्षक और पहलवानों के लिए पौष्टिक आहार चाहिए। पुराने संरक्षकों की परंपरा कमजोर होने तथा पर्याप्त नई सहायता न मिलने से अखाड़ों को चलाना कठिन हो जाता है।

चरण 2: बदलते जीवन और रुचियों का प्रभाव बताइए शिक्षा और रोजगार के लिए युवाओं का शहरों की ओर जाना भी अखाड़ों की सक्रियता घटा सकता है। अन्य खेलों तथा आधुनिक मनोरंजन की ओर बढ़ती रुचि से नियमित कुश्ती अभ्यास करने वाले कम हो सकते हैं। स्थानीय स्तर पर प्रोत्साहन और प्रतियोगिताओं का अभाव भी इस परंपरा को कमजोर करता है।

चरण 3: निष्कर्ष आर्थिक संरक्षण और सुविधाओं की कमी, युवाओं का पलायन तथा उनकी बदलती रुचियाँ गाँवों में अखाड़ों के समाप्त होने के प्रमुख संभावित कारण हैं।

त्वरित सुझाव: 'कारण हो सकते हैं' के लिए संरक्षण की कमी और युवाओं की भागीदारी में कमी को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

11(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (क) भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गई कैसे? सोदाहरण लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण 'भक्तिन' में लेखिका और भक्तिन का आत्मीय संबंध जीवन की छोटी-छोटी आदतों से उभरता है।
- 'अधिक देहाती' होने का आशय ग्रामीण भोजन और रहन-सहन के प्रति लेखिका के बढ़ते लगाव से है। यह भक्तिन के व्यक्तित्व के प्रभाव का संकेत है।

चरण 1: भक्तिन के दृढ़ संस्कार समझाइए भक्तिन अपने ग्रामीण संस्कारों, खान-पान और जीवन-पद्धति से गहराई से जुड़ी हुई थी। महादेवी के यहाँ आकर उसने अपनी आदतों को पूरी तरह नहीं बदला। इसके विपरीत अपनी आत्मीयता और सेवा से उसने लेखिका के जीवन में ग्रामीण स्वाद और सहजता का प्रवेश करा दिया। इस प्रभाव को महादेवी अपने अधिक देहाती हो जाने के रूप में स्वीकार करती हैं।

चरण 2: भोजन के उदाहरण प्रस्तुत कीजिए भक्तिन के कारण लेखिका को मक्के के दलिये और बाजरे के पुए जैसे ग्रामीण व्यंजनों का स्वाद अच्छा लगने लगा। ज्वार के भुने भुट्टों तथा हरे चने के प्रति भी उनका लगाव बढ़ा। ये उदाहरण बताते हैं कि ग्रामीण भोजन केवल भक्तिन की पसंद तक सीमित नहीं रहा, बल्कि लेखिका के अपने स्वाद और दिनचर्या का हिस्सा बन गया।

चरण 3: कथन में निहित आत्मीयता स्पष्ट कीजिए यहाँ 'देहाती' शब्द का प्रयोग किसी हीनता को बताने के लिए नहीं हुआ है। लेखिका स्नेहपूर्वक स्वीकार करती हैं कि भक्तिन के साथ रहने से वे ग्रामीण जीवन की सादगी और उसके स्वाद के अधिक निकट आ गईं। भक्तिन ने स्वयं को बदलने की अपेक्षा अपने सहज व्यक्तित्व से महादेवी को अधिक प्रभावित किया।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन के आने से महादेवी के भोजन और रुचियों में ग्रामीणपन बढ़ गया। उन्हें मक्के का दलिया, बाजरे के पुए, ज्वार के भुने भुट्टे और हरे चने प्रिय लगने लगे। ग्रामीण संस्कारों वाली भक्तिन के इस प्रभाव के कारण लेखिका अपने को अधिक देहाती कहती हैं।

त्वरित सुझाव: 'सोदाहरण' के उत्तर में ग्रामीण व्यंजनों के नाम देकर स्पष्ट कीजिए कि भक्तिन के आने से लेखिका की रुचि कैसे बदली।

11(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (ख) 'गगरी फूटी-बैल पियासा' से लेखक का क्या आशय है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकगीत की पंक्ति का आशय समझने के लिए उसके ग्रामीण बिंब और पाठ में उससे व्यक्त सामाजिक व्यंग्य, दोनों को पहचानना आवश्यक है।
- 'गगरी' जल की उपलब्धता का और 'प्यासा बैल' उस श्रमशील कृषक जीवन का बिंब है जिसकी आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं।

चरण 1: लोकगीत के बिंब का अर्थ समझाइए 'गगरी फूटी-बैल पियासा' में विरोधाभास यह है कि गगरी का जल निकल जाने पर भी जरूरतमंद बैल प्यासा रह गया। वर्षा की प्रार्थना के संदर्भ में यह पंक्ति पानी के अभाव से त्रस्त ग्रामीण जीवन और खेती की आवश्यकता सामने लाती है। बैल खेत में श्रम करने वाला पशु है; उसकी प्यास कृषि से जुड़े जीवन की कठिनाई को व्यक्त करती है।

चरण 2: विकास योजनाओं पर व्यंग्य स्पष्ट कीजिए लेखक इस बिंब से ऐसी व्यवस्था की ओर संकेत करता है जिसमें योजनाओं पर

बहुत धन खर्च होने पर भी सामान्य लोगों की बुनियादी आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं। गगरी फूटना संसाधनों के निकल जाने का संकेत है, जबकि बैल का प्यासा रहना वास्तविक जरूरतमंद तक लाभ न पहुँचने को बताता है। भ्रष्टाचार और धन के दुरुपयोग के कारण खर्च का परिणाम लोकहित में नहीं दिखाई देता।

चरण 3: कथन का सामाजिक आशय जोड़िए केवल योजनाएँ बनना या धन खर्च होना पर्याप्त नहीं है; सहायता किसान और आम आदमी तक पहुँचना भी आवश्यक है। जब संसाधन खर्च हो जाएँ और जिन्हें उनका लाभ मिलना चाहिए वे अभाव में रहें, तब विकास का उद्देश्य अधूरा रह जाता है। पंक्ति इसी विडंबना को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक का आशय है कि विकास योजनाओं पर भारी धन खर्च होने के बावजूद भ्रष्टाचार और दुरुपयोग से जरूरतमंद जनता लाभ से वंचित रह जाती है। जैसे गगरी फूटकर पानी निकल जाने पर भी बैल प्यासा है, वैसे ही संसाधन खर्च होने पर भी सामान्य लोगों के अभाव दूर नहीं होते।

त्वरित सुझाव: उत्तर में 'गगरी फूटी' को संसाधनों के व्यय और 'बैल पियासा' को जरूरतमंद तक लाभ न पहुँचने से जोड़िए।

11(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (ग) उन संघर्षों का उल्लेख कीजिए जिनसे टकराते-टकराते चार्ली चैप्लिन के व्यक्तित्व में निखार आता चला गया। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विष्णु खरे के पाठ में चार्ली का व्यक्तित्व जीवन की कठिनाइयों से निर्मित हुआ है। उनकी करुणा और हास्य का संबंध उनके भोगे हुए अभावों से है।
- संघर्ष का उल्लेख करते समय उसके प्रभाव को भी समझाना चाहिए कि उससे चार्ली साधारण मनुष्य के दुख और सम्मान के प्रति कैसे संवेदनशील बने।

चरण 1: बचपन के अभाव और पारिवारिक पीड़ा चार्ली का बचपन गरीबी, भूख और असुरक्षा में बीता। माँ के असहाय जीवन और मानसिक अस्वस्थता ने उनकी पीड़ा को और गहरा किया। बचपन में मिले अपमान तथा पेट भरने की चिंता से उन्होंने जाना कि निर्धन मनुष्य का जीवन कितनी कठिनाइयों से घिरा रहता है। ये अनुभव उनकी स्मृति से मिटे नहीं, बल्कि आगे चलकर उनकी कला की संवेदना बने।

चरण 2: आजीविका तथा सामाजिक विषमता से संघर्ष आजीविका और अभिनय के क्षेत्र में स्थान बनाने के लिए भी उन्हें कठिन संघर्ष करना पड़ा। समाज में धनवान और गरीब के बीच की दूरी तथा शक्तिशाली लोगों के सामने साधारण आदमी की विवशता उनके अनुभव का हिस्सा बनी। इसलिए उनकी फिल्मों का छोटा, असहाय आदमी बार-बार ठोकर खाकर भी अपना अस्तित्व बचाने का प्रयत्न करता है। चार्ली ने विपत्तियों के बीच मनुष्य की जिजीविषा को पहचाना।

चरण 3: संघर्षों से व्यक्तित्व का विकास इन अनुभवों ने चार्ली को केवल दुखी नहीं बनाया; उनमें धैर्य, मानवीय करुणा और अपनी ही कठिनाइयों पर हँस सकने की क्षमता विकसित की। इसीलिए उनका हास्य पीड़ित व्यक्ति का अपमान नहीं करता, बल्कि उसके प्रति दर्शक की सहानुभूति जगाता है। दुख को हास्य में व्यक्त करने की यही क्षमता उनके व्यक्तित्व और अभिनय की विशिष्टता है।

चरण 4: निष्कर्ष गरीबी, भूख, पारिवारिक दुख, अपमान और आजीविका के संघर्षों ने चार्ली को संवेदनशील तथा जुझारू बनाया। इन्हीं से उनकी कला में करुणा, हास्य और साधारण मनुष्य के प्रति आत्मीयता का निखार आया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल कठिनाइयाँ न गिनाएँ; गरीबी और अपमान को चार्ली की करुणा, जिजीविषा तथा हास्य-दृष्टि से जोड़ें।

11(घ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (घ) 'नमक' कहानी में क्या संदेश छिपा हुआ है? स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी 'नमक' देश-विभाजन के बावजूद बनी हुई मानवीय आत्मीयता और जन्मभूमि के प्रति लगाव की कहानी है।
- नमक यहाँ केवल खाने की वस्तु नहीं, बल्कि अपनी मिट्टी की स्मृति और साझा सांस्कृतिक संबंधों का प्रतीक है।

चरण 1: जन्मभूमि से अटूट लगाव सिख बीबी भारत में रहकर भी लाहौर को अपना वतन मानती हैं और सफ़िया से वहाँ का नमक लाने का आग्रह करती हैं। उनकी इच्छा बताती है कि राजनीतिक विभाजन मनुष्य की स्मृतियों और अपने पुराने घर के प्रति प्रेम को मिटा नहीं सकता। थोड़े-से नमक में उन्हें अपनी जन्मभूमि का स्वाद और उससे जुड़ी आत्मीयता मिलती है।

चरण 2: सीमाओं के बीच मानवीय संबंध नमक लाने के प्रसंग में सीमा के दोनों ओर के अधिकारियों का व्यवहार भी यही मानवीय भाव सामने लाता है। वे अपने पीछे छूटे स्थानों को आत्मीयता से याद करते हैं और बीबी की भावना को समझते हैं। किसी का लगाव देहली से है, किसी का ढाका से। इस प्रकार कथा दिखाती है कि अलग देश और धर्म के लोग बिछोह तथा वतन के प्रेम की एक-जैसी अनुभूति रखते हैं।

चरण 3: कहानी का केंद्रीय संदेश कहानी का संदेश है कि धर्म, राष्ट्र और सरहद के भेद से ऊपर मनुष्यता का संबंध है। विभाजन भूमि और प्रशासन को बाँट सकता है, लेकिन साझा जीवन, संस्कृति, यादों और पारस्परिक प्रेम को पूरी तरह नहीं बाँट सकता। सफ़िया का नमक पहुँचाना इसी आत्मीयता को निभाने का कार्य है। मनुष्य को दूसरे की पहचान से पहले उसकी भावनाओं का आदर करना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष 'नमक' प्रेम, भाईचारे और मानवीय एकता का संदेश देती है। इसका नमक अपनी मिट्टी से लगाव और उस साझा संवेदना का प्रतीक है जिसे राजनीतिक सीमाएँ समाप्त नहीं कर सकतीं।

त्वरित सुझाव: संदेश स्पष्ट करते समय सिख बीबी की लाहौर के नमक की इच्छा और सीमा-अधिकारियों की वतन-स्मृतियों को उदाहरण बनाएँ।

11(ङ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (ङ) डॉ. आम्बेडकर के मतानुसार दासता की व्यापक परिभाषा क्या है? स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. आम्बेडकर व्यक्ति की स्वतंत्रता में अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार जीवन तथा व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता को भी शामिल करते हैं।
- दासता का अर्थ केवल कानूनी गुलामी नहीं; सामाजिक विवशता भी व्यक्ति को दूसरों की इच्छा के अधीन बना सकती है।

चरण 1: संकीर्ण अर्थ और व्यापक अर्थ सामान्य अर्थ में दासता वह कानूनी व्यवस्था है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे का गुलाम होता है। आम्बेडकर इस अर्थ को अपर्याप्त मानते हैं। उनके अनुसार दासता में वह सामाजिक अवस्था भी शामिल है जिसमें कुछ लोग दूसरे व्यक्तियों को अपने द्वारा निर्धारित व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश कर देते हैं। यहाँ कानूनी बंधन न होने पर भी दूसरे की इच्छा व्यक्ति के जीवन को नियंत्रित करती है।

चरण 2: व्यवसाय की स्वतंत्रता का उदाहरण ऐसी स्थिति जाति-प्रथा में दिखाई देती है। यदि किसी व्यक्ति को उसकी रुचि, योग्यता और इच्छा के विरुद्ध केवल जन्म के आधार पर कोई निश्चित व्यवसाय करना पड़े, तो वह अपनी जीवन-दिशा स्वयं नहीं चुन सकता। समाज उसके लिए काम तय कर देता है और उससे बाहर जाने का अवसर नहीं देता। उसे कानूनी रूप से गुलाम भले न कहा जाए, पर वह सामाजिक दबाव के अधीन रहता है।

चरण 3: सामाजिक विवशता का परिणाम इस प्रकार काम चुनने की स्वतंत्रता छीन लेना भी दासता है। इससे व्यक्ति अपनी क्षमता का विकास नहीं कर पाता और उसके निर्णय पर दूसरों का अधिकार हो जाता है। आम्बेडकर की व्यापक परिभाषा स्वतंत्रता को केवल

नाममात्र की कानूनी स्थिति के रूप में नहीं, बल्कि अपने जीवन और काम के विषय में वास्तविक निर्णय-क्षमता के रूप में देखती है।

चरण 4: निष्कर्ष आम्बेडकर के अनुसार वह सामाजिक अवस्था भी दासता है जिसमें दूसरे लोग व्यक्ति को विवश होकर अपनी इच्छा के विरुद्ध आचरण करने पर बाध्य करें। जाति के कारण मनचाहा व्यवसाय न चुन पाना इसी व्यापक दासता का उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के साथ जन्म के आधार पर व्यवसाय थोपने का उदाहरण दें; इससे कानूनी और सामाजिक दासता का अंतर स्पष्ट होगा।

12(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (क) 'जो हुआ होगा' की दो अर्थ छवियाँ लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'सिल्वर वैडिंग' में 'जो हुआ होगा' कथन किशनदा की मृत्यु के प्रसंग में आता है। इसका अर्थ प्रसंग और पात्र की मन:स्थिति से खुलता है।
- अर्थ-छवि में शब्दों का सीधा अर्थ और उनके पीछे छिपा मानवीय संकेत, दोनों पहचाने जाते हैं।

चरण 1: मृत्यु के कारण की अनभिज्ञता पहली अर्थ-छवि है कि पता नहीं, किशनदा को क्या हुआ और उनकी मृत्यु किस कारण हुई। यशोधर बाबू उनके परिचित से मृत्यु का कारण पूछते हैं, पर उसे कोई निश्चित कारण मालूम नहीं है। उसका 'जो हुआ होगा' कहना इस अनभिज्ञता को प्रकट करता है।

चरण 2: अकेलेपन से जीवन का बुझ जाना दूसरी अर्थ-छवि वृद्धावस्था में अकेलेपन और सहारे के अभाव की है। यशोधर बाबू सोचते हैं कि जिनके बाल-बच्चे और अपना परिवार नहीं होते, वे अवकाश-प्राप्ति के बाद एकाकी जीवन में भीतर से टूट सकते हैं। इसलिए मृत्यु का कारण केवल कोई पहचाना हुआ रोग ही नहीं, जीवन में अपनापन और उद्देश्य न बचना भी हो सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'जो हुआ होगा' की दो अर्थ-छवियाँ हैं: मृत्यु के वास्तविक कारण का अज्ञात होना तथा बुढ़ापे के अकेलेपन और निराश्रयता से जीवन का क्षीण हो जाना।

त्वरित सुझाव: दोनों अर्थ अलग रखें: एक परिचित के उत्तर की अनभिज्ञता है, दूसरा यशोधर बाबू द्वारा अनुभव किया गया अकेलेपन का संकेत।

12(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (ख) मुअनजो-दड़ो की सभ्यता को लो-प्रोफाइल सभ्यता क्यों कहा जाता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'लो-प्रोफाइल' का आशय ऐसी संस्कृति से है जिसमें वैभव और शक्ति का दिखावा कम हो तथा जीवन में सादगी और संयम हो।
- मुअनजो-दड़ो की सभ्यता की पहचान उसके पुरातात्त्विक अवशेषों और साधारण नागरिक के लिए बनी व्यवस्थाओं से होती है।

चरण 1: शक्ति और वैभव के प्रदर्शन का अभाव मुअनजो-दड़ो में भव्य राजप्रासादों, विशाल मंदिरों और राजाओं के विराट स्मारकों का वैसा प्रदर्शन नहीं मिलता जैसा अन्य प्राचीन सभ्यताओं में दिखाई देता है। वहाँ प्राप्त औज़ारों और वस्तुओं में भी युद्ध तथा शासकीय शक्ति के प्रदर्शन की अपेक्षा दैनिक जीवन की उपयोगिता अधिक दिखाई देती है। इससे सत्ता के अहंकार से दूर, संयमित संस्कृति का बोध होता है।

चरण 2: सादगी में सुव्यवस्थित नागरिक जीवन सुनियोजित सड़कें, नालियाँ, कुएँ, स्नानागार और घर वहाँ के नागरिक जीवन की सुव्यवस्था दिखाते हैं। कला और शिल्प में सौंदर्य-बोध है, पर अनावश्यक भव्यता या प्रदर्शन नहीं। इसलिए उसकी समृद्धि को विशाल राजसी इमारतों से नहीं, सामान्य लोगों की सुविधाओं और सुरुचिपूर्ण जीवन से समझा जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष सादगी, संयम, उपयोगी नगर-व्यवस्था और राजसी वैभव के दिखावे का अभाव मुअनजो-दड़ो को 'लो-प्रोफाइल' सभ्यता बनाता है।

त्वरित सुझाव: 'लो-प्रोफाइल' को पिछड़ापन न समझें; उत्तर में दिखावे के अभाव के साथ उन्नत नगर-व्यवस्था का उदाहरण अवश्य जोड़ें।

12(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (ग) बालक आनंद यादव के पिता ने किन शर्तों पर उसे विद्यालय जाने दिया? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' में आनंद की पढ़ने की इच्छा और पिता की खेती का काम करवाने की ज़िद के बीच संघर्ष है।
- पिता विद्यालय की अनुमति देते हुए भी खेत और पशुओं के काम से आनंद को मुक्त नहीं करते।

चरण 1: विद्यालय से पहले और बाद की शर्तें पिता की शर्त थी कि आनंद सुबह बस्ता लेकर खेत आए और पाठशाला जाने से पहले खेत में पानी लगाए। छुट्टी होने पर बस्ता घर में रखकर सीधे खेत पहुँचे और लगभग एक घंटे पशु चराए। इस प्रकार विद्यालय जाने के साथ खेती तथा पशुओं की देखभाल का काम उसे पहले की तरह करना था।

चरण 2: काम अधिक होने पर पढ़ाई छोड़ने की शर्त किसी दिन खेत में काम अधिक हुआ तो उसे विद्यालय से छुट्टी लेकर वह काम पूरा करना था। पिता ने यह भी स्पष्ट किया कि पढ़ाई का बहाना बनाकर खेती के काम से बचना स्वीकार नहीं होगा। आनंद ने पढ़ाई जारी रखने की तीव्र इच्छा के कारण ये कठिन शर्तें मान लीं और परिश्रम तथा अध्ययन दोनों का दायित्व सँभाला।

चरण 3: निष्कर्ष आनंद को विद्यालय से पहले खेत में पानी लगाने, लौटकर पशु चराने तथा अधिक कृषि-कार्य होने पर विद्यालय से छुट्टी करने की शर्तों पर पढ़ने की अनुमति मिली।

त्वरित सुझाव: उत्तर को तीन समयों में याद करें: विद्यालय से पहले सिंचाई, छुट्टी के बाद पशु चराना और अधिक काम वाले दिन विद्यालय से छुट्टी।

13(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (क) यशोधर पंत की तीन चारित्रिक विशेषताएँ सोदाहरण समझाइए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र की विशेषता को उसके व्यवहार और कथा की किसी निश्चित घटना से स्पष्ट किया जाता है।
- यशोधर पंत का व्यक्तित्व पुरानी पीढ़ी के संस्कारों, आत्मीयता और बदलते परिवार से उत्पन्न असमंजस को व्यक्त करता है।

चरण 1: परंपरानिष्ठ और सादगीप्रिय यशोधर पंत पुराने संस्कारों तथा सादे जीवन में विश्वास करते हैं। किशन दा उनके आदर्श हैं और उनके जीवन पर किशन दा के रहन-सहन तथा विचारों की गहरी छाप है। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर बच्चों द्वारा आयोजित आधुनिक ढंग का समारोह उन्हें सहज नहीं लगता। इस प्रसंग में उनकी परंपरानिष्ठा और दिखावे से दूरी प्रकट होती है।

चरण 2: आत्मीय और संबंधों का सम्मान करने वाले वे संबंधों को केवल उपयोगिता या आर्थिक लाभ की कसौटी पर नहीं देखते। किशन दा की स्मृति उनके लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है; उनके अकेलेपन और अंत को याद करके वे व्यथित होते हैं। अपनों और परिचितों के प्रति आत्मीय लगाव उनके चरित्र का मानवीय पक्ष है। इसीलिए परिवार के भीतर अपनापन कम होता देख वे दुखी होते हैं।

चरण 3: संवेदनशील, किंतु नए परिवेश में असमंजसग्रस्त वे बच्चों की भौतिक प्रगति को ही संतोष का पर्याप्त आधार नहीं मान पाते। भूषण ड्रेसिंग गाउन देकर उसे पहनकर सुबह दूध लेने जाने को कहता है। यशोधर पंत की इच्छा होती है कि बेटा स्वयं दूध लाने की जिम्मेदारी ले और उनसे आराम करने को कहे। वस्तु के साथ वे स्नेहपूर्ण व्यवहार चाहते हैं। उनका बार-बार किसी बात को समझ में न आने वाला बताना नई जीवन-शैली से तालमेल बैठाने की कठिनाई भी दर्शाता है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर पंत परंपरानिष्ठ, आत्मीय और संवेदनशील व्यक्ति हैं। किशन दा के प्रति सम्मान, आधुनिक वर्षगाँठ-समारोह से असहजता तथा बेटे से स्नेह की अपेक्षा इन विशेषताओं को स्पष्ट करती हैं।

त्वरित सुझाव: तीन विशेषताएँ अलग-अलग लिखें और प्रत्येक के साथ किशन दा, वर्षगाँठ या ड्रेसिंग गाउन का उपयुक्त प्रसंग जोड़ें।

13(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (ख) ऐन की डायरी निजी कहानी न होकर तत्कालीन समाज का दर्पण है, कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डायरी निजी अनुभवों का लेखा होते हुए भी अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का प्रमाण बन सकती है।
- ऐन फ्रैंक के अनुभवों में नाज़ी उत्पीड़न, युद्ध की विभीषिका और स्त्रियों की स्थिति जैसे व्यापक प्रश्न उभरते हैं।

चरण 1: निजी जीवन में नाज़ी उत्पीड़न का प्रतिबिंब ऐन की डायरी में एक किशोरी की इच्छाएँ, भय और संबंध अवश्य हैं, पर उसका छिपकर रहना केवल निजी परिस्थिति नहीं है। यहूदियों पर नाज़ी अत्याचारों और उन्हें पकड़ लिए जाने की आशंका के कारण परिवार को गुप्त स्थान में रहना पड़ता है। साधारण जीवन, स्वतंत्र आवाजाही और सुरक्षा से वंचित होना पूरे उत्पीड़ित समुदाय की दशा को सामने लाता है।

चरण 2: युद्धकालीन समाज की असुरक्षा हवाई हमलों, गोलीबारी, भोजन की कठिनाइयों तथा पकड़े जाने के भय के बीच दैनिक जीवन चलता है। छिपे हुए लोगों को अपनी छोटी-छोटी गतिविधियों में भी सावधानी रखनी पड़ती है। ये अनुभव बताते हैं कि युद्ध केवल मोर्चे पर लड़ रहे सैनिकों तक सीमित नहीं होता; वह सामान्य नागरिकों के भोजन, नींद, स्वतंत्रता और मन:स्थिति तक को प्रभावित करता है।

चरण 3: स्त्री की स्थिति और मानवीय आकांक्षाएँ ऐन स्त्रियों के योगदान की उपेक्षा तथा पुरुष-प्रधान समाज में उन्हें कम महत्त्व दिए जाने पर भी विचार करती है। साथ ही पढ़ने, लिखने, प्रेम और स्वतंत्र जीवन की उसकी आकांक्षा दमन के बीच जीवित मानवीय आशा का परिचय देती है। इस प्रकार डायरी एक व्यक्ति के अनुभव से आगे बढ़कर तत्कालीन सामाजिक सोच, अन्याय और जीवन-संघर्ष को उजागर करती है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन की डायरी निजी कथा के माध्यम से यहूदियों पर अत्याचार, युद्धग्रस्त नागरिक जीवन और स्त्री की असमान स्थिति दिखाती है; इसलिए वह तत्कालीन समाज का सजीव दर्पण है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को निजी अनुभव से सामाजिक स्थिति तक ले जाएँ: गुप्तवास, युद्ध का भय और स्त्री-विषयक चिंतन तीन स्पष्ट आधार हैं।

13(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (ग) 'जूझ' के लेखक के कवि बनने की कहानी का वर्णन कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव के कवि बनने की प्रक्रिया में शिक्षक की प्रेरणा, कविता का अभ्यास और प्रकृति से जुड़ा अनुभव एक साथ काम करते हैं।
- कथा में काव्य-रुचि का विकास सुनने और अनुकरण करने से स्वतंत्र रचना की ओर होता है।

चरण 1: सौंदलगेकर मास्टर से प्रेरणा लेखक के मराठी शिक्षक सौंदलगेकर मास्टर भाव और लय के साथ कविताएँ पढ़ाते थे। वे कवियों के प्रसंग सुनाते और अपनी कविताएँ भी सुनाते थे। उनके प्रभावशाली पाठ ने लेखक को कविता के संगीत, भाव और आनंद से परिचित कराया। उसे अनुभव हुआ कि कविता केवल पुस्तक में पढ़ने की वस्तु नहीं, बल्कि अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने का माध्यम भी है।

चरण 2: स्मरण, गायन और रचना का अभ्यास लेखक पढ़ी हुई कविताओं को याद करता और खेत में काम करते समय उन्हें गुनगुनाता था। मास्टर की शैली का अनुकरण करते हुए वह कविता के उतार-चढ़ाव और लय का अभ्यास करता। धीरे-धीरे वह अपने आसपास के पेड़-पौधों, खेतों और ग्रामीण जीवन को कविता के विषय की तरह देखने लगा। इस प्रकार दैनिक श्रम के बीच भी उसकी कल्पनाशक्ति सक्रिय रहने लगी।

चरण 3: अपनी कविताएँ और शिक्षक का मार्गदर्शन लेखक स्वयं तुक मिलाने और पंक्तियाँ बनाने लगा। नई पंक्तियों को सँजोकर वह अपनी रचनाएँ मास्टर को दिखाता और उनसे सुधार तथा प्रोत्साहन पाता। इस सतत अभ्यास से उसका संकोच कम हुआ और आत्मविश्वास बढ़ा। प्रकृति और अकेलेपन में अब उसे रचना का अवसर मिलने लगा; जो खेत पहले केवल श्रम का स्थान था, वही काव्य-कल्पना का

क्षेत्र बन गया।

चरण 4: निष्कर्ष सौंदलगेकर मास्टर की प्रेरणा, कविताओं के लयबद्ध अभ्यास, प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण और अपनी रचनाओं पर मिले मार्गदर्शन ने आनंद यादव को कवि बनने की दिशा दी।

त्वरित सुझाव: कवि बनने की कहानी को क्रम में लिखें: शिक्षक का प्रभाव, कविता का अभ्यास, प्रकृति का अनुभव और स्वतंत्र काव्य-रचना।

14. 'जूझ' कहानी आधुनिक किशोर-किशोरियों को किन जीवन-मूल्यों की प्रेरणा दे सकती है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक कथा में शिक्षा और सृजन की आकांक्षा कठिन पारिवारिक तथा आर्थिक परिस्थितियों से संघर्ष करती है।
- जीवन-मूल्य समझाने के लिए सामान्य उपदेश के साथ कथा की संबंधित घटना देना आवश्यक है।
- कथा का संघर्ष शिक्षा-प्रेम, परिश्रम, लक्ष्य के प्रति दृढ़ता और सही मार्गदर्शन के महत्त्व को स्पष्ट करता है।

चरण 1: शिक्षा के प्रति लगन और दृढ़ संकल्प लेखक के पिता उसे पढ़ाई छोड़कर खेती में लगाना चाहते हैं, पर वह शिक्षा को अपना जीवन बदलने का साधन समझता है। विद्यालय लौटने की उसकी तीव्र इच्छा परिस्थितियों के सामने आत्मसमर्पण नहीं करने देती। यह प्रसंग किशोर-किशोरियों को प्रेरित करता है कि शिक्षा का मूल्य पहचानें और कठिनाई आते ही अपने सार्थक लक्ष्य को छोड़ न दें।

चरण 2: समस्या का व्यावहारिक समाधान और सहायता लेना लेखक अपनी माँ के सहयोग से दत्ता जी राव के सामने पढ़ाई की समस्या रखता है। दत्ता जी राव के हस्तक्षेप से विद्यालय जाने का रास्ता खुलता है। यहाँ केवल विरोध करने के स्थान पर समझदार व्यक्ति की सहायता लेकर समाधान खोजने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। आज के किशोर भी उचित सलाह, संवाद और सहयोग के माध्यम से बाधाओं को दूर करना सीख सकते हैं।

चरण 3: श्रमशीलता और जिम्मेदारी विद्यालय जाने का अवसर मिलने पर भी लेखक का खेत का काम समाप्त नहीं होता। उसे खेती और पढ़ाई दोनों का दायित्व निभाना पड़ता है। कठिन दिनचर्या के बावजूद पढ़ने की इच्छा बनाए रखना उसके परिश्रम और अनुशासन का प्रमाण है। इससे प्रेरणा मिलती है कि उपलब्ध अवसर का उपयोग नियमित अभ्यास और जिम्मेदारी के साथ किया जाए; सफलता केवल इच्छा करने से नहीं मिलती।

चरण 4: अच्छी संगति और आत्मविकास विद्यालय में पढ़ाई के प्रति गंभीर सहपाठी मंत्री का साथ लेखक के अध्ययन को दिशा देता है। वह अपनी स्थिति सुधारने के लिए सीखने और अभ्यास करने में रुचि लेता है। इससे किशोरों को प्रेरणा मिलती है कि तुलना से निराश होने के बजाय दूसरों की अच्छी आदतें अपनाएँ और अपनी क्षमता बढ़ाने का प्रयत्न करें।

चरण 5: गुरु का सम्मान और सृजनशीलता सौंदलगेकर मास्टर का भावपूर्ण काव्य-पाठ लेखक के भीतर कवि को जगाता है। वह कविताओं का अभ्यास करता, प्रकृति को ध्यान से देखता और अपनी रचनाएँ शिक्षक को दिखाता है। यह प्रसंग बताता है कि मार्गदर्शन का आदर और निरंतर अभ्यास प्रतिभा को विकसित करते हैं। सीमित साधनों और कठिन श्रम के बीच भी संवेदना, कल्पना तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति को जीवित रखा जा सकता है।

चरण 6: निष्कर्ष जूझ किशोर-किशोरियों को शिक्षा से प्रेम, दृढ़ संकल्प, परिश्रम, जिम्मेदारी, सहयोग लेने की समझ और सृजनशीलता की प्रेरणा देती है। आनंद का जीवन दिखाता है कि उचित मार्गदर्शन और निरंतर प्रयास से कठिन परिस्थितियों में भी व्यक्तित्व का विकास संभव है।

त्वरित सुझाव: हर जीवन-मूल्य के साथ कथा की घटना जोड़ें: पढ़ाई में वापसी, दत्ता जी राव की सहायता, खेत का श्रम, मंत्री की संगति और मास्टर की प्रेरणा।

अथवा

14. 'सिल्वर वेडिंग' के आधार पर उन जीवन-मूल्यों की सोदाहरण समीक्षा कीजिए जो समय के साथ बदल रहे हैं। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू और उनके परिवार के माध्यम से पुरानी तथा नई पीढ़ी के जीवन-मूल्यों का अंतर उभरता है।
- समीक्षा में प्रत्येक बदलते मूल्य को कहानी के किसी प्रसंग से जोड़ना चाहिए और परिवर्तन के सकारात्मक तथा नकारात्मक, दोनों पक्षों को समझना चाहिए।

चरण 1: सादगी और उपभोक्तावादी जीवन की तुलना कीजिए यशोधर बाबू सादगी, संयम और परंपरागत जीवन-पद्धति को महत्त्व देते हैं। उनके बच्चे आधुनिक सुविधाओं, पहनावे और समारोहों को जीवन की आवश्यकताओं से जोड़ते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर आयोजित 'सिल्वर वैडिंग' का उत्सव यशोधर बाबू को सहज नहीं लगता, जबकि परिवार इसे खुशी व्यक्त करने का अवसर मानता है। यहाँ घरेलू सादगी की जगह उत्सवप्रियता और आधुनिक उपभोग-संस्कृति बढ़ रही है। मिलकर खुशी मनाना उचित है, किंतु प्रदर्शन के कारण व्यक्ति की रुचि की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए।

चरण 2: आर्थिक सफलता और बड़ों की प्रतिष्ठा का संबंध समझिए यशोधर बाबू के लिए स्थिर नौकरी, कर्तव्यनिष्ठा और अनुभव का मूल्य है। भूषण की अधिक आय नई पीढ़ी की महत्त्वाकांक्षा और आर्थिक सफलता को सामने लाती है। परिवार के निर्णयों में बच्चों का प्रभाव बढ़ता है और पिता अपने अनुभवों को अप्रासंगिक होता अनुभव करते हैं। आत्मनिर्भरता सकारात्मक परिवर्तन है, पर व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आधार केवल कमाई बन जाने पर अनुभव और भावनात्मक संबंध पीछे छूट सकते हैं।

चरण 3: उपहार और संवेदनशील सेवा का अंतर स्पष्ट कीजिए भूषण पिता को ड्रेसिंग गाउन देता है और सुबह दूध लेने जाते समय उसे पहनने को कहता है। यशोधर बाबू चाहते हैं कि बेटा उनसे दूध लाने का काम छोड़कर आराम करने को कहे। यह प्रसंग दिखाता है कि प्रेम की अभिव्यक्ति उपहार तक सीमित हो सकती है, जबकि पिता को वास्तविक आवश्यकता सहानुभूति और जिम्मेदारी बाँटने की है। भौतिक सुविधा तभी सार्थक है जब उसके साथ आत्मीयता भी जुड़ी हो।

चरण 4: स्वतंत्रता और परंपरा में संतुलन पहचानिए बच्चों की अपनी जीवन-दृष्टि और पत्नी का उनके साथ बदलना व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बढ़ते महत्त्व को दिखाता है। दूसरी ओर, यशोधर बाबू किशनदा के संस्कारों और पुराने आदर्शों से गहराई से जुड़े हैं। नई परिस्थितियों को केवल पुरानी कसौटी पर परखने से उनका अकेलापन बढ़ता है। इसलिए नई पीढ़ी को बड़ों की संवेदनाओं का सम्मान और पुरानी पीढ़ी को समयानुकूल बदलाव स्वीकार करना चाहिए।

चरण 5: निष्कर्ष कहानी में सादगी, पारिवारिक आत्मीयता और अनुभव का सम्मान आर्थिक सफलता, आधुनिक सुविधा तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रभाव में बदल रहे हैं। लेखक संवेदनशीलता और पारस्परिक संवाद के आधार पर परंपरा तथा आधुनिकता का संतुलन आवश्यक बताते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में हर मूल्य के साथ एक प्रसंग जोड़ें : सादगी के लिए वर्षगाँठ का समारोह, आर्थिक सफलता के लिए भूषण और आत्मीयता के लिए ड्रेसिंग गाउन का उपहार।